वर्ष-10, अंक-16 पृष्ठ- 8, मूल्य : 02 रुपये

TM

आधुनिक भारत का आधुनिक नजरिया

आधुनिक समाचार

प्रयागराज शनिवार, 16 मार्च, 2024

प्रयागराज से प्रकाशित हिन्दी दैनिक

Adhunik Samachar

संक्षिप्त समाचार

लोकसभा चुनाव में तैनात किए जाएंगे 3.4 लाख केंद्रीय सुरक्षाकर्मी

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

नई दिल्ली। लोकसभा और चार राज्यों के विधानसभा चुनावों में राज्य पुलिस बलों के साथ-साथ 3.4 लाख केंद्रीय सशस्त्र पुलिस बल (सीएपीएफ) कर्मियों को तैनात किया जाएगा। बंगाल में सीएपीएफ के 92,000 कर्मियों

को तैनात किया जा सकता है। 2024 लोकसभा और चार राज्यों के विधानसभा चुनावों में राज्य पुलिस बलों के साथ-साथ 3.4 लाख केंद्रीय सशस्त्र पुलिस बल (सीएपीएफ) कर्मियों को तैनात किया जाएगा। बंगाल में सीएपीएफ के 92000 कर्मियों को तैनात किया जा सकता है। आतंकवाद प्रभावित जम्मू और कश्मीर में 63500 कर्मियों को तैनात किया जाएगा। नक्सल प्रभावित छत्तीसगढ़ में 36000 जवान तैनात किए जाएंगे।आतंकवाद प्रभावित जम्मू और कश्मीर में 63,500 कर्मियों को तैनात किया जाएगा। नक्सल प्रभावित छत्तीसगढ़ में 36,000 जवान तैनात किए जाएंगे। एक अधिकारी ने बताया कि चुनाव आयोग ने स्वतंत्र, निष्पक्ष और शांतिपूर्ण चुनाव सुनिश्चित करने के लिए चरणबद्ध तरीके से सभी राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों में सीएपीएफ की अधिकतम 3,400 कंपनियों को तैनात करने का फैसला किया है। एक सीएपीएफ कंपनी में लगभग 100 कर्मी शामिल होते है। आंध्र प्रदेश, अरुणाचल प्रदेश, ओडिशा और सिक्किम में विधानसभा चुनाव भी लोकसभा चुनाव के साथ ही होंगे। बंगाल में चरणबद्ध तरीके से सीएपीएफ की अधिकतम 920 कंपनियां तैनात की जा सकती है।

वाराणसी में मतदान की तारीख को लेकर चुनाव आयोग से नाराज उद्धव गुट

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

मुंबई। चुनाव आयोग ने लोकसभा चुनावों की तारीखों का एलान कर दिया है। जैसे ही लोकसभा के चुनावी कार्यक्रम की घोषणा हुई, शिवसेना (यूबीटी) ने चुनाव आयोग पर ही हमला बोल दिया। उद्धव गुट ने कहा कि चुनाव लगभग 2.5 महीने तक चलेंगे और वाराणसी में अंत में चुनाव रखा गया। इतना अतिरिक्त समय देकर चुनाव आयोग बंद दरवाजों के पीछे किसकी मदद करने की कोशिश कर रहा है? आनंद दुबे ने कहा कि कहा कि पीएम मोदी पूरे देश में प्रचार करने के बाद वाराणसी आएंगे। उनको जानकर इतना समय दिया गया है। शिवसेना (यूबीटी) के प्रवक्ता आनंद दुबे ने तीखा हमला बोलते हुए आयोग से पूछा कि प्रधानमंत्री के निर्वाचन क्षेत्र वाराणसी में आखिरी चरण में चुनाव कराने का फैसला क्यों किया गया। उद्धव गुट ने कहा कि चुनाव लगभग 2.5 महीने तक चलेंगे और वाराणसी में अंत में चुनाव रखा गया। इतना अतिरिक्त समय देकर चुनाव आयोग बंद दरवाजों के पीछे किसकी मदद करने की कोशिश कर रहा है आनंद दुबे ने कहा कि हम चुनाव आयोग का उसी तरह सम्मान करते हैं जैसे हम सुप्रीम कोर्ट का सम्मान करते हैं क्योंकि चुनाव आयोग एक स्वतंत्र संगठन है, लेकिन कहीं न कहीं

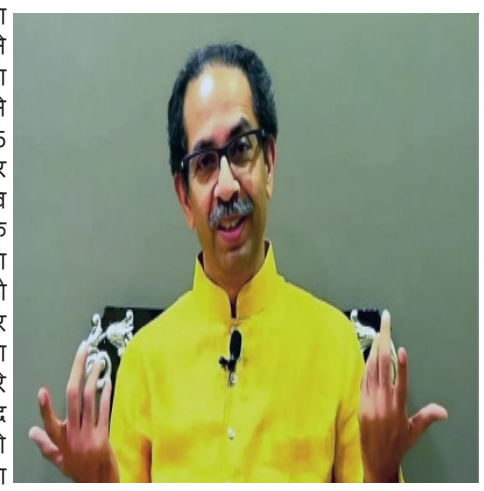

इसने अपनी गरिमा खो दी है। उन्होंने कहा कि पीएम मोदी पूरे देश में प्रचार करने के बाद वाराणसी आएंगे। उनको जानकर इतना समय दिया गया है। इससे पहले, भारत के चुनाव आयोग द्वारा लोकसभा और चार राज्यों की विधानसभाओं के लिए चुनाव की तारीखों की घोषणा के बाद आदर्श आचार संहिता (एमसीसी) लागू हो गई है। मुख्य चुनाव आयुक्त राजीव कुमार ने सभी राजनीतिक दलों और उनके नेताओं से चुनाव आचार संहिता का सख्ती से पालन करने को कहा। 543 लोकसभा सीटों के लिए आम चुनाव 19 अप्रैल से सात चरणों में होंगे, मतगणना 4 जून को होगी। आंध्र प्रदेश, अरुणाचल प्रदेश, ओडिशा और सिक्किम की राज्य विधानसभाओं के चुनाव भी इसी अवधि में होंगे। मुख्य चुनाव आयुक्त राजीव कुमार ने शनिवार को कहा कि 19 अप्रैल से 7 चरणों में मतदान होगा। अप्रैल को होने वाले पहले चरण में कुल 102 निर्वाचन क्षेत्रों में मतदान होगा। लोकसभा चुनाव का दूसरा चरण 26 अप्रैल को होगा जिसमें 89 निर्वाचन क्षेत्रों में मतदान होगा। लोकसभा चुनाव का तीसरा चरण 7 मई को होगा। इस चरण में कुल 94 सीटों पर मतदान होगा। चौथे चरण में 13 मई को 96 लोकसभा सीटों पर मतदान होगा। पांचवें चरण में 49 लोकसभा सीटों पर 20 मई को मतदान होगा। छठे चरण में 25 मई को 57 सीटों पर मतदान होगा। लोकसभा चुनाव का सातवां और अंतिम चरण 1 जून को होगा जिसमें 57 सीटों पर मतदान होगा। मुख्य चुनाव आयुक्त (सीईसी) राजीव कुमार ने कहा कि 2024 के लोकसभा चुनाव में कुल 96.8 करोड़ मतदाता वोट डालने के पात्र होंगे।

'अगर हिम्मत है तो भाजपा को प्रियांक खरगे ने 'वंशवाद' पर क्यों दी चेतावनी

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

बेंगलुरु। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे के बेटे प्रियांक खरगे ने भाजपा पर आज हमला बोला है। भाजपा द्वारा उन्हें

वंशवादी कहे जाने पर उन्होंने नाराजगी जाहिर की है। प्रियांक ने भाजपा के कई नेताओं के नाम लेकर पार्टी को चेतावनी तक दे डाली है। भाजपा ने अपने सोशल मीडिया हैंडल पर प्रियांक खरगे को वंशवादी कहा था जिसपर उन्होंने पलटवार किया। कांग्रेस नेता ने कहा कि भाजपा में अगर हिम्मत है तो वो कर्नाटक में जिन नेताओं के परिवार के सदस्य राजनीति में हैं उन्हें वंशवादी कहें। उन्होंने बीवाई विजेंद्र बीएस बोम्मई तेजस्वी सूर्य जगदीश शेट्टर को टैग कर निशाना साधा।दरअसल, भाजपा ने अपने सोशल मीडिया हैंडल पर प्रियांक को 'वंशवादी' कहा था, जिसपर उन्होंने कहा कि भाजपा में अगर हिम्मत है तो वो कर्नाटक में जिन नेताओं के परिवार के सदस्य राजनीति में हैं, उन्हें वंशवादी कहें। उन्होंने बीवाई विजेंद्र, बीएस बोम्मई, तेजस्वी सूर्य, जगदीश शेट्टर को टैग कर निशाना साधा। राज्य मंत्रिमंडल के सदस्य प्रियांक कांग्रेस के राष्ट्रीय प्रमुख मल्लिकार्जुन खरगे के बेटे हैं, इसी कारण भाजपा ने उनपर वंशवाद की राजनीति करने का आरोप लगाया।भाजपा पर पलटवार करते हुए खरगे ने कहा कि अगर कर्नाटक भाजपा के लोगों को शक है कि वो वंशवाद से मुक्त हैं तो उनका मैं मुफ्त डीएनए परीक्षण करा सकता हूं।इससे पहले शनिवार को कर्नाटक बीजेपी ने प्रियांक के उस बयान पर प्रतिक्रिया दी थी, जिसमें उन्होंने सात चरणों में लोकसभा चुनाव कराने के लिए चुनाव आयोग की आलोचना की थी। भाजपा ने अपने एक्स हैंडल पर कहा, 'मिस्टर राजवंश प्रियांक खरगे, अपने आंसू पोंछें और अपने 'स्टार प्रचारक' को लाएं। प्रियांक ने आगे दावा किया कि यह सुनिश्चित करने के लिए मतदान ऐसे चरणबद्ध किया गया है कि केंद्र में सत्तारूढ़ भाजपा को अपने 'स्टार प्रचारक' को देश भर में अधिक आसानी से यात्रा करने के लिए अधिक समय मिले।

चुनाव में पार्टियों के सामने कई चुनौतियां, राजनीतिक दलों ने बाजी मारने के लिए बनाई क्या योजनाएं

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

नई दिल्ली। चुनाव आयोग ने शनिवार को चुनाव कार्यक्रम की घोषणा के साथ औपचारिक रूप से 2024 के आमचुनाव की शुरुआत कर दी। राजनीतिक विश्लेषक भाजपा को

लगातार तीसरी बार सत्ता की प्रबल दावेदार के रूप में देख रहे है। लोकसभा चुनाव 2024 की तारीखों का एलान हो गया है। इस बार चुनाव का आयोजन 19 अप्रैल से 1 जून तक सात चरणों में किया जाएगा। चुनावों की मतगणना 4 जून को की जाएगी। सभी पाटिर्यों की ने अपनी जीत का लक्ष्य बना लिया है। हालांकि इन सभी राजनीतिक दलों के सामने कई चुनौतियां आने वाली हैं। भाजपा ने अकेले दम पर 370 लोकसभा सीटें जीतने का महत्वाकांक्षी लक्ष्य रखा है। विपक्ष भी भाजपा को मात देने के लिए अपनी एकजुटता बढ़ा रहा है। आइए जानते हैं कि प्रमुख राष्ट्रीय दलों की क्या ताकत और कमजोरी है और उनके समक्ष किस प्रकार की चुनौतियां हैं। भाजपा के पास पीएम मोदी के रूप में एक ऐसा नेता व चेहरा है, जो पूरे विपक्ष पर भारी पड़ता है। 2014 के बाद से भाजपा ने मजबूत संगठनात्मक ढांचा बनाया। इसकी निगरानी राष्ट्रीय नेतृत्व द्वारा की जाती है। विपक्षी नेता भी भाजपा के दबदबे को स्वीकार करते हैं, वहां भी जहां पर कि भाजपा सत्ता में नहीं है। भाजपा की एक और ताकत चुनावी जंग की पिच तैयार करने में उसका निर्विवाद प्रभुत्व है। खासकर लोकसभा चुनाव में ।कई दिग्गज नेताओं की जगह नए चेहरों पर भरोसा किया है। अपने संसदीय क्षेत्रों में पुराने चेहरों की मजबूत पकड़ के मुकाबले नए चेहरों को स्थान बनाने में चुनौतियों का सामना करना पड़ सकता है। हिंदुत्व, राष्ट्रवाद और लाभार्थी एजेंडा देश के अधिकांश हिस्सों में लोकप्रिय रहा है। दक्षिण और पूर्वी भारत में इसकी परीक्षा होगी।राजनीतिक दलों को फंडिंग करने से जुड़ी चुनावी बांड योजना को रद करने के सुप्रीम कोर्ट के फैसले और दानदाताओं के बारे में रिपोर्ट सार्वजनिक होने से विपक्ष को मुद्दा मिल गया है। कांग्रेस देश की सबसे पुरानी पार्टी है। जाति आधारित जनगणना को मुद्दा बना उसने ओबीसी वर्ग को और रिझाया है। कांग्रेस ने गरीबों, पीडि़तों, दलितों, किसानों, युवाओं और महिलाओं को न्याय का आश्वासन दिया है। इनके लिए पांच गारंटी दी है।

इंसान नहीं, रोबोट कर रहा काम, बीते 10 वर्षों में बदली चीन की तस्वीर; बेरोजगारी की ओर बढ़ रहा देश

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

नई दिल्ली। क्या मशीन इंसानों की जगह ले सकती है? यह सवालों लंबे समय से बहस का मुद्दा बना हुआ है। वहीं दूसरी ओर, एआई टेकनेलॉजी का तेजी से विकास इंसानों की नौकरियों पर खतरा बनता नजर आ रहा ह इंसानों की जगह कम खर्च और समय में रोबोट से काम करवाए जा सकते हैं। इस कड़ी में रोबोट का इस्तेमाल सबसे ज्यादा करने वाले देशों की लिस्ट में चीन का नाम शीर्ष पर है। चीन के लगभग हर उद्योग में रोबोट का इस्तेमाल हो रहा है। रोबोट इंडस्ट्री की वजह से चीन की तस्वीर पिछले 10 वर्षों में पूरी तरह बदल चुकी है। विकसित ही नहीं, विकासशील देशों में भी इसका प्रभाव देखने को मिला है। बीते 10 सालों में विकासशील देशों की तस्वीर बदली हैं। विश्व अर्थव्यवस्था रैंकिंग में दूसरे स्थान पर रहने वाले देश चीन की ही बात करें तो ऑटोमेशन के साथ पिछले

एक दशक में यहां की तस्वीर पूरी तरह बदल चुकी है। चीन की वर्तमान स्थिति को लेकर अमेरिकी थिंक टैंक इंफॉर्मेशन टेकनेलॉजी एंड इननेवेटिव फाउंडेशन (आईटीआईएफ) की एक लेटेस्ट रिपोर्ट सामने आई है। इस रिपोर्ट में चीन को लेकर कुछ चौंकाने वाले तथ्य सामने आए हैं। इस रिपोर्ट के मुताबिक रोबोट की वजह बेरोजगारी तेजी से बढ़ रही है और इसका सबसे ज्यादा प्रभाव चीन पर पड़ा है। चौंकाने वाले तथ्यों में सामने आया है कि जानकारों ने अलग-अलग उद्योंगों में काम कर रहे रोबोटों की संख्या का जिनता अनुमान लगाया था वह इससे 12.5 गुना ज्यादा है। ऑटोमेशन की ओर बढ़ रहे चीन की स्थिति ऐसी है कि यहां लगभग हर उद्योग में इंसान की जगह रोबोट काम कर रहे हैं। सबसे चौंकाने वाले तथ्यों में एक यह कि दुनिया भर के उद्योगों में काम करने वाले कुल रोबोटों का 52 प्रतिशत चीन में कार्यरत हैं।

फिर आएगा चुनावी बॉन्ड पर नया आंकड़ा

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

नई दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट रजिस्ट्री ने कोर्ट के आदेश का पालन करते हुए शनिवार को चुनाव आयोग को सील बंद लिफाफे में जमा कराया गया चुनावी बॉन्ड का ब्योरा वापस कर दिया है। अब चुनाव आयोग रविवार शाम तक यह ब्योरा वेबसाइट पर डाल देगा। यह ब्योरा अप्रैल 2019 से पहले का है।सुप्रीम कोर्ट रजिस्ट्री ने कोर्ट के आदेश का पालन करते हुए शनिवार को चुनाव आयोग को सील बंद लिफाफे में जमा कराया गया चुनावी बॉन्ड का ब्योरा वापस कर दिया है। अब चुनाव आयोग रविवार शाम तक यह ब्योरा वेबसाइट पर डाल देगा। यह ब्योरा अप्रैल 2019 से पहले का है।

पीटीआई-एसआईसी का विलय सर्वोत्तम निर्णय', पीटीआई अध्यक्ष बैरिस्टर गोहर अली खान ने फैसले पर जताई खुशी

इस्लामाबाद। पाकिस्तान तहरीक-ए-इंसाफ और सुनने इत्तेहाद काउंसिल के विलय पर पीटीआई के अध्यक्ष बैरिस्टर गोहर अली खान ने बयान दिया। उन्होंने कहा कि उनकी पार्टी ने मौजूद परिस्थितियों में 'गंभीर और सर्वोत्तम निणर्य' लिय पीटीआई के अध्यक्ष बैरिस्टर गोहर अली खान ने कहा कि पाकिस्तान तहरीक-ए-इंसाफ सुनने इत्तेहाद काउंसिल के बीच विलय गंभीर और सर्वोत्तम निर्णय

रहा । द न्यूज इंटरनेशनल के अनुसार उन्होंने दोहराया कि पीटीआई-एसआईसी विलय बहुत विचार- विमर्श के बाद लिया गया सबसे अच्छा निणर्य था। पीटीआई अध्यक्ष गोहर ने आगे उम्मीद जताई कि शीर्ष अदालत इमरान खान की पार्टी को न्याय प्रदान करेगी। दरअसल, उनका यह बयान पीटीआई और एसआईसी विलय पर पाटिर्यों के अंदर से कुछ परस्पर विरोधी आवाजें उठने के बाद आया है। उन्होंने कहा कि 'न केवल आरक्षित सीटें, बल्कि हम अपने स्वतंत्र उम्मीदवारों से भी सुरक्षा प्राप्त करना चाहते थे, क्योंकि किसी राजनीतिक दल में विलय से दलबदल भी रुक जाएगा। गोहर ने पीटीआई के संस्थापक इमरान खान और उनकी पतनी बुशरा बीबी के खिलाफ 190 मिलियन यूरो के घोटाले मामले की सुनवाई के बाद अदियाला जेल के बाहर मीडिया से बात करते हुए यह बात कही। द न्यूज इंटरनेशनल के अनुसार, उन्होंने दोहराया कि पीटीआई-एसआईसी विलय बहुत विचार-विमर्श के बाद लिया गया सबसे अच्छा निणर्य था। पीटीआई अध्यक्ष गोहर ने आगे उम्मीद जताई कि शीर्ष अदालत इमरान खान की पार्टी को न्याय प्रदान करेगी, जिसे महिलाओं और अल्पसंख्यकों के लिए आरक्षित सीटें पाने के योग्य होने के कारण खारिज कर दिया गया था। उन्होंने विस्तार से बताया कि पीटीआई की नजर कुल 80 सीटों पर है, जिनमें महिलाओं के लिए 67 आरक्षित सीटें और अल्पसंख्यकों के लिए 11 सीटें शामिल हैं। गोहर ने कहा कि वे यह जानने के लिए शीर्ष अदालत से संविधान के अनुच्छेद 51 की व्याख्या भी मांगेंगे कि क्या किसी पार्टी को जीतने वाली सीटों के अनुपात से अधिक आरक्षित सीटें मिल सकती हैं या नहीं। गोहर ने घोषणा की कि पीटीआई को आरक्षित सीटें देने से इनकार करने के पाकिस्तान चुनाव आयोग (ईसीपी) के फैसले को बरकरार रखने वाले पेशावर उच्च न्यायालय (पीएचसी) के फैसले को सुप्रीम कोर्ट में चुनौती दी जाएगी। इससे पहले गुरुवार को, पीटीआई को एक बड़ा झटका लगा जब पीएचसी ने ईसीपी के फैसले को चुनौती देने वाली पीटीआई समर्थित एसआईसी की याचिका को खारिज कर दिया, जिसने पार्टी को आरक्षित सीटें देने से इनकार कर दिया था। द न्यूज इंटरनेशनल की रिपोर्ट के अनुसार, अदालत ने आगे कहा कि 'याचिकाएं सर्वसम्मति से खारिज कर दी गईं।' इसके अलावा, उन्होंने विदेशों में चल रहे विरोध प्रदर्शनों से किसी भी तरह के जुड़ाव को भी खारिज कर दिया और स्पष्ट किया कि उनकी पार्टी का अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (आईएमएफ) और विश्व बैंक (डब्लूबी) मुख्यालय के बाहर हाल के प्रदर्शनों में कोई हिस्सा नहीं था। बैरिस्टर गौहर ने कहा कि अगर विदेशी पाकिस्तानी कुछ बना रहे हैं तो यह उनका अपना फैसला होगा। उल्लेखनीय है कि द न्यूज इंटरनेशनल की रिपोर्ट के अनुसार, पाकिस्तान में 2024 के आम चुनावों में कथित अनियमितताओं के खिलाफ विदेशों से आए कई पीटीआई कार्यकर्ताओं ने वाशिंगटन में आईएमएफ और डब्लूबी मुख्यालय के बाहर विरोध प्रदर्शन किया। विरोध प्रदर्शन की पाकिस्तानी सरकार द्वारा उस समय भी आलोचना की गई जब देश अपने आर्थिक संकट को दूर करने के लिए आईएमएफ से एक और बेलआउट पैकेज की मांग कर रहा था। एक सवाल के जवाब में पीटीआई अध्यक्ष गोहर ने कहा कि पार्टी ने आईएमएफ से पाकिस्तान को वित्तीय सहायता देना बंद करने के लिए नहीं कहा; हालाँकि, इसने स्वीकार किया कि पार्टी ने वैश्विक ऋणदाता से स्वतंत्र और निष्पक्ष चुनाव और अपने धन के पारदर्शी आवंटन के लिए अपनी प्रतिबद्धताओं को वापस लेने का आग्रह किया।

सत्ता में आते ही खत्म कर दूंगा बाइडन प्रशासन की यह नीति', ट्रंप ने अमेरिकी राष्ट्रपति पर जमकर बोला हमला

ओहियो। अमेरिका में बढ़ रहे प्रवासी अपराधों को लेकर पूर्व राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने बाइडन प्रशासन के खिलाफ जमकर बोला। उन्होंने दावा किया कि अगर वह सत्ता में आए को हर 'खुली सीमा नीति' को समाप्त कर देंगे। ओहियो के वांडालिया के डेटन उपनगर में एक रैली को संबोधित करते हुए ट्रंप ने जॉजिन्या विश्वविद्यालय के नर्सिंग छात्र लेकन रिले की मौत का भी जिक्र किया। अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने बाइडन प्रशासन के खिलाफ जमकर बोला। पूर्व राष्ट्रपति ने बाइडन पर अमेरिका में हिंसक गिरोह के सदस्यों और गैंगस्टरों सहित लाखों प्रवासियों को अनुमति देने का आरोप लगाया। उन्होंने दावा किया कि अगर वह सत्ता में आए तो हर खुली सीमा नीति को समाप्त कर देंगे। ट्रंप ने कहा कि प्रवासी अपराध के कारण एक और अमेरिकी की जान नहीं जानी चाहिए। फॉक्स न्यूज के अनुसार,

पूर्व राष्ट्रपति ने बाइडन पर अमेरिका में 'हिंसक गिरोह के सदस्यों और गैंगस्टरों सहित लाखों प्रवासियों' को अनुमति देने का आरोप लगाया ट्रंप ने रैली में कहा कि 'प्रवासी अपराध के कारण एक और अमेरिकी की जान नहीं जानी चाहिए। हम एक और लेकन को खो नहीं सकते। जब मैं संयुक्त राज्य अमेरिका का राष्ट्रपति बनूंगा, तो हम पहले दिन लेकन के लिए न्याय की मांग करेंगे। मेरा प्रशासन बाइडन प्रशासन की नीति की हर खुली सीमा को समाप्त कर देगा। उन्होंने आगे कहा कि बाइडन की हर आपदा को पलटने का सबसे तेज तरीका बहुत सरलता से मुझे सत्ता में वापस लाना है। अमेरिका-मेक्सिको सीमा पर स्थिति पर जोर देते हुए ट्रंप ने कहा कि हम इसे फिर से ठीक करने जा रहे हैं। पूर्व राष्ट्रपति ने कहा, 'मेरे पहले कार्यों में हमारे देश पर आक्रमण को रोकना और जो बाइडन के अवैध एलियंस को घर वापस भेजना होगा। अपने ओहियो भाषण के दौरान, पूर्व राष्ट्रपति ने इस साल के अंत में होने वाले चुनावों में निर्वाचित नहीं होने पर देश में 'खूनखराबे' की चेतावनी दी।

इस राज्य के मुख्यमंत्री ने दिखाई दरियादिली सड़क हादसा देख रुकवाया काफिला

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

पणजी। गोवा में एक दर्दनाक सड़क हादसा सामने आया है। यहां एक ट्रक घाटी में गिर गया। इस हादसे

में एक व्यक्ति की मौत हो गई और पांच बच्चों सहित 13 लोग गंभीर रूप से घायल हो गए। गोवा के एक वरिष्ठ पुलिस अधिकारी ने कहा कि चालक ने ट्रक से नियंत्रण खो दिया था जिसके बाद ट्रक पलट गया और घाटी में गिर गया। उन्होंने कहा कि ट्रक में सवार लोग उसमें दब गए। उन्होंने बताया कि एक व्यक्ति की मौके पर ही मौत हो गई जबकि पांच बच्चों और तीन महिलाओं सहित 13 लोग गंभीर रूप से घायल हो गए।समाचार एजेसी पीटीआई ने पुलिस के हवाले से बताया कि यह हादसा दक्षिण गोवा जिले के क्यूपेम शहर के पास हुआ है। सभी लोग ट्रक पर सवार थे। एक वरिष्ठ पुलिस अधिकारी ने कहा कि चालक ने ट्रक से नियंत्रण खो दिया था, जिसके बाद ट्रक पलट गया और घाटी में गिर गया। उन्होंने कहा कि ट्रक में सवार लोग उसमें दब गए। उन्होंने बताया कि एक व्यक्ति की मौके पर ही मौत हो गई, जबकि पांच बच्चों और तीन महिलाओं सहित 13 लोग गंभीर रूप से घायल हो गए। हालांकि, हादसे के बाद मौके से गुजर रहे मुख्यमंत्री प्रमोद सावंत ने घायलों की मदद की। बता दें कि गोवा के मुख्यमंत्री प्रमोद सावंत और समाज कल्याण मंत्री सुभाष फल देसाई चुनाव प्रचार के बाद रास्ते से गुजर रहे थे।

जन्मदिन की पार्टी में रईसजादों ने रेस्टोरेंट में लहराया असलहा, तड़तड़ाई गोलियां

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

प्रयागराज । घटना 13 मार्च की रात की है। जिस रेस्टोरेंट में यह घटना हुई वह जीएचएस चौराहे के पास स्थित है। यहां जशन मनाने के लिए एक दर्जन की संख्या में युवक जुटे थे। रात 9:30 बजे के बाद केक काटा जा रहा था। इसी दौरान यहां एक के बाद एक दो थे। रात 9:30 बजे के बाद केक काटा जा रहा था। इसी दौरान यहां एक के बाद एक दो फायर किए गए। सरेआम गोलियां चलने से आसपास सनसनी फैल गई। घटना का एक वीडियो भी वायरल हुआ है, जिसमें युवक केक काटते दिख रहे हैं और तभी पीछे से गोलियां चलने की आवाज सुनाई देती है।

फायर किए गए। सिविल लाइंस स्थित एक रेस्टोरेंट में जशन के सुरूर में डूब रईसजादे जोश में होश खो बैठे। बर्थडे पार्टी मनाने पहुंचे युवकों ने केक काटे जाने के दौरान हवा में असलहा लहराया और गोलियां भी चलाईं। दो राउंड फायर किए, जिससे वहां सनसनी फैल गई। फिलहाल, मामले में सिविल लाइंस पुलिस ने कोई भी जानकारी न होने की बात कही है। सूत्रों के मुताबिक घटना 13 मार्च की रात की है। जिस रेस्टोरेंट में यह घटना हुई वह जीएचएस चौराहे के पास स्थित है। यहां जशन मनाने के लिए एक दर्जन की संख्या में युवक जुटे मौके पर सजी मेज पर दो केक भी दिख रहे हैं। सूत्रों का कहना है कि रेस्टोरेंट में कई सीसीटीवी कैमरे भी लगे हैं और संभवतः घटना किसी न किसी कैमरे में भी जरूर कैद हुई होगी। चर्चा इस बात की भी है कि पार्टी में शामिल एक युवक अपनी लाइसेंसी रिवॉल्वर लेकर पहुंचा था और इसी से फायरिंग की गई। हालांकि,इस बारे में पुलिस ने किसी भी तरह की जानकारी की बात से इन्कार किया। थाना प्रभारी रामाश्रय यादव ने बताया कि ऐसी कोई सूचना या शिकायत उन्हें नहीं मिली है।

फर्जी नंबर प्लेट लगाकर कोयले का परिवहन करने में दो गिरफ्तार

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

सोनभद्र। एडिशनल एसपी मुख्यालय ने कोतवाली में प्रेस कॉन्फ्रेंस कर किया मामले का खुलासा थाना रॉबर्ट्सगंज पुलिस द्वारा फर्जी नम्बर प्लेट लगाकर कोयला परिवहन करने वाले 02 अभियुक्तगण गिरफ्तार, 01 अदद टेलर मय कोयला (अनुमानित कीमत 45 लाख) सीज। एडिशनल एसपी मुख्यालय कालू सिंह ने कहा कि आवेदक कमलेश केवट पुत्र देवनाथ केवट नि0 ग्राम नौबतपुर थाना सैयदराजा जनपद चन्दौली द्वारा थाना रावर्टसगंज पर सूचना दी गयी कि उसके वाहन संख्या एनएल 01 जी 0761 का फर्जी नम्बर प्लेट लगा कर एक अन्य वाहन चलाया जा रहा है, जिसके आधार पर थाना रावर्टसगंज पर मु0अ0सं0 190/2024 धारा 419, 420, 465, 468, 471 भादवि बनाम अज्ञात पंजीकृत किया गया, जिसकी विवेचना उ0नि0 अजय कुमार श्रीवास्तव के द्वारा सम्पादित की जा रही थी ।पुलिस अधीक्षक सोनभद्र, डॉ0 यशवीर सिंह के निर्देशन में जनपद में अवैध कोयला परिवहन पर रोक लगाने व इसमें संलिप्त अभियुक्तों की गिरफ्तारी हेतु चलाये जा रहे अभियान के क्रम में अपर पुलिस अधीक्षक (मुख्यालय) के पर्यवेक्षण व क्षेत्राधिकारी नगर के नेतृत्व में शुक्रवार को थाना रॉबर्ट्सगंज पुलिस को मुखवीर द्वारा सूचना दी गयी कि एक ट्रेलर नं0 एनएल 01 जी 0761 का फर्जी नम्बर प्लेट लगाकर कोयला लाद कर ले जा रहा है। इस सूचना पर थाना रावर्टसगंज पुलिस द्वारा तथाकथित वाहन जिसका चे0नं0 407224350865 को हिन्दुआरी पुलिया के पास पकड़ा गया, जिसका चालक अरूण कुमार पुत्र राम विशाले पाल निवासी बरगवा थाना बरगवां जिला सिंगरौली मध्य प्रदेश उम्र करीब 32 वर्ष तथा सहचालक घनश्याम पुत्र राम अवध निवासी भभईच थाना चोपन जिला सोनभद्र उम्र करीब 29 वर्ष को परिवहन करते हुए पाया गया, जिसे छानबीन के दौरान तथा वादी मुकदमा के द्वारा तस्दीक किये जाने पर पूर्णतयः कूटरचित दस्तावेज एवं फर्जी नं0 प्लेट पाये जाने पर समय करीब 23.00 बजे थाना रावर्टसगंज पुलिस द्वारा दोनो अभियुक्तगण उपरोक्त ट्रेलर के साथ गिरफ्तार किया गया। उल्लेखनीय है कि चालक एवं सहचालक दोनो सगे रिस्तेदार (बहनोई व साले) है, जिनके द्वारा पूछताछ के दौरान बताया गया कि उक्त ट्रेलर को शिबू सिंह पुत्र अशोक सिंह निवासी चटका थाना सिंगरौली जनपद सिंगरौली (मध्य प्रदेश) के देख रेख में चलवाया जा रहा था। उक्त ट्रेलर व उस पर लदे कोयले की अनुमानित कीमत करीब 45 लाख रूपये है। अब उक्त अभियोग की विवेचना धारा 420, 467, 468, 471 भादवि व 4/21 खान खनिज अधिनियम के अन्तर्गत होगी। **जिसमे गिरफ्तारी हुए अभियुक्त व वाहन** 1- वाहन संख्या न्0013 0761 ट्रेलर के चालक अरूण कुमार पुत्र राम विशाले पाल निवासी बरगवा थाना बरगचा जिला सिंगरौली मध्य प्रदेश उम्र करीब 32 वर्ष। 2- वाहन संख्या न्0013 0761 ट्रेलर का सहचालक घनश्याम पुत्र राम अवध निवासी भभईच थाना चोपन जिला सोनभद्र उम्र करीब 29 वर्ष। **बरामदगी का विवरण-** एक अदद ट्रेलर संख्या न्0130761 मय कोयला (अनुमानित कीमत 45 लाख रुपये) बरामद । **गिरफ्तारी/बरामदगी करने वाली पुलिस टीम का विवरण-** 1. उ0नि0 अजय कुमार श्रीवास्तव थाना रॉबर्ट्सगंज, जनपद सोनभद्र। 2. हे0का0 अनीश कुमार थाना रॉबर्ट्सगंज जनपद सोनभद्र ।

स्कूलों में स्वास्थ्य-स्वच्छता और कल्याण संबंधी जागरूकता जरूरी'

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

नोएडा। नोएडा आयुष्मान भारत-स्कूल हेल्थ एंड वेलनेस प्रोग्राम (स्कूल स्वास्थ्य कार्यक्रम) के अंतर्गत स्कूली बच्चों- किशोरों में स्वास्थ्य, स्वच्छता एवं कल्याण संबंधी जागरूकता पैदा करने और विद्यालय स्तर पर संचालित स्वास्थ्य गतिविधियों को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से मुख्य चिकित्सा अधिकारी कार्यालय में 11 से 14 मार्च तक एक प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस अवसर पर मुख्य चिकित्सा अधिकारी (सीएमओ) डा. सुनील कुमार शर्मा ने कहा- स्कूलों में स्वास्थ्य एवं स्वच्छता संबंधी जागरूकता होना जरूरी है। प्रशिक्षण प्राप्त करने के उपरांत आप सभी इस संदेश को पूरी ईमानदारी के साथ शिक्षकों व विद्यार्थियों तक पहुंचाएं। उन्होंने उम्मीद जाहिर की प्रशिक्षण के दौरान मिली जानकारियां विद्यार्थियों से साझा करेंगे। कार्यशाला में स्वास्थ्य व शिक्षा विभाग के 12 कर्मियों को प्रशिक्षण दिया गया। कार्यशाला के समापन अवसर पर सीएमओ ने प्रशिक्षणार्थियों को प्रमाण पत्र प्रदान किये। राष्ट्रीय बाल स्वास्थ्य कार्यक्रम (आरबीएसके) - डिस्ट्रिक्ट अर्ली इंटरवेंशन सेंटर (डीईआईसी) की प्रबंधक रचना वर्मा ने बताया- बच्चों के समग्र शैक्षणिक विकास में स्वास्थ्य एवं पोषण की सकारात्मक भूमिका जरूरी है। इसी के मद्देनजर आयुष्मान भारत कार्यक्रम के अंतर्गत स्कूल हेल्थ एंड वेलनेस प्रोग्राम शुरू किया गया है। कार्यक्रम के तहत विद्यालयों के माध्यम से स्वास्थ्य विभाग द्वारा अन्य स्वास्थ्य कार्यक्रम संचालित किये जाएंगे। कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य स्कूल जाने वाले बच्चों-किशोरों में स्वास्थ्य एवं स्वच्छता संबंधी जागरूकता पैदा करना तथा विद्यालय स्तर पर संचालित स्वास्थ्य गतिविधियों को प्रोत्साहित करना है। स्कूल स्वास्थ्य कार्यक्रम के तहत प्रत्येक विद्यालय से दो शिक्षकों एक महिला व एक पुरुष को हेल्थ एंड वेलनेस एंबेसडर के रूप में नामित किया जाएगा। उन्हें स्वास्थ्य व्यवहार को बढ़ावा देने और रोगों की रोकथाम के लिए प्रशिक्षित किया जाएगा। हेल्थ एंड वेलनेस एंबेसडर हर सप्ताह एक घंटे रोचक गतिविधियों के माध्यम से सत्र आयोजित करेंगे। प्रत्येक कक्षा से दो नामित छात्र इन स्वास्थ्य संवर्धन संदेशों को समाज तक पहुंचाने के लिए हेल्थ एंड वेलनेस मैसेंजर के रूप में कार्य करेंगे। उन्होंने बताया- इस प्रशिक्षण में मुख्य रूप से किशोर स्वास्थ्य पोषण, मादक द्रव्यों के दुरुपयोग, एचआईवी, इंटरनेट के उपयोग आदि 11 विषयों पर प्रशिक्षण के साथ चर्चा की गई। उन्होंने बताया- स्वास्थ्य विभाग के आठ और शिक्षा विभाग के चार प्रशिक्षकों को प्रशिक्षण दिया गया। आरबीएसके के नोडल अधिकारी एवं अपर मुख्य चिकित्सा अधिकारी डा. ललित कुमार, डा. अलताफ, डा. केके शर्मा, डा. अशोक और डीईआईसी की प्रबधक रचना वर्मा, ने मुख्य रूप से प्रशिक्षण दिया।

आधुनिक गेस्ट हाउस

- वाटर प्रूफ शेड
- पार्किंग की सुविधा
- मन्दिर की सुविधा
- सी.सी.टीवी.
- छोटे-बड़े कार्यक्रमों के अलग-अलग रेट
- 45000 sq. feet. एरिया
- हरे-भरे वातावरण
- AC कमरा (VIP)

CALL: 9519313894,9415608783, 9415608710

आधुनिक समाचार पब्लिशिंग हाउस, यूपीएसआईडीसी, रेमण्ड रोड, औधोगिक थाने के पीछे भारत पेट्रोलियम के पहले, औधोगिक क्षेत्र, नैनी, प्रयागराज

आम के पेड़ों की कटाई-छटाई हेतु अनुमति की आवश्यकता नहीं

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
प्रतापगढ़। जिला उद्यान अधिकारी सुनील कुमार शर्मा ने जनपद के समस्त कृषकों को सूचित किया जाता है अपर मुख्य सचिव, उत्तर प्रदेश शासन के द्वारा आम के बगीचे जो 40-50 साल पुराने हो चुके है, उनकी पैदावार घटकर 07 टन प्रति हेक्टेयर हो गई है, जबकि राष्ट्रीय औसत लगभग 15 टन प्रति हेक्टेयर है। पुराने हो चुके आम के बगीचें में आम का उत्पादन बढ़ाने के लिए कटाई-छटाई की आवश्यकता होती है, किन्तु पुराने आम के पेड़ों की कटाई-छटाई (प्रूनिंग एवं ट्रेनिंग)/ तृतीयक शाखाओं की छटाई/सेन्टर ओपनिंग किसानों द्वारा किये जाने पर वन विभाग के अधिकारियों द्वारा रोक दिया जाता है एवं वन विभाग के अनुमति की मांग की जाती है। आम के बगीचों में पैदावार बढ़ाने के लिए यदि किसानों द्वारा आम के पेड़ों की कटाई-छटाई (प्रूनिंग एवं ट्रेनिंग)/तृतीयक शाखाओं की छटाई/सेन्टर ओपनिंग की जाती है तो इस कार्य के लिए किसी भी विभाग के अनुमति की आवश्यकता नहीं है,क्योंकि यह एक स्थापित औद्यानिक प्रक्रिया है।

नैनी पुलिस चौकी छिवकी मैं हुआ भव्य मंदिर का शिलान्यास प्राण प्रतिष्ठा, यज्ञ, सुंदरकांड रुद्राभिषेक और आरती के साथ

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
नैनी, प्रयागराज। बुधवार दिनांक 13-03-2024 को छिवकी नैनी चौकी कोतवाली कमिशन्रेट प्रयागराज मैं भव्य मंदिर का शिलान्यास हुआ जिसमें प्रभु भोलेनाथ और हनुमान जी के साथ गणेश जी परिवार जी का प्राण प्रतिष्ठा सुंदरकांड यज्ञ के साथ हुआ साथ ही भंडारा प्रसाद के रूप में बांटा गया जिसमें नैनी के तमाम भक्तजन प्रसाद का आशीर्वाद ग्रहण किये मंदिर का नाम श्री शिव विघ्नहरण हनुमान मंदिर आचार्य नागेंद्र कुमार मिश्रा आचार्य बृजभूषण ओझा जी नामकरण किये साथ में अचानक से बाबा जी मऊ हरिया बाबा प्रकट होकर मंदिर का आयोजन में शक्ति भोग लगाए। आयोजन में पुलिस प्रशासन की ओर से नैनी थाना प्रभारी (इंस्पेक्टर) श्री यशपाल सिंह, छिवकी पुलिस चौकी प्रभारी अमित सिंह उप निरीक्षक रामानंद सिंह यादव उप निरीक्षक आनंद सिंह कांस्टेबल संजय कुमार के अलावा औद्योगिक क्षेत्र नागर समेत संबंधित थाना के दारोगा व महिला एवं पुरुष पुलिसकर्मी, होमगार्ड एवं क्षेत्र के गणमान्य व्यक्तियों व पार्षद पूजा पवन यादव, पार्षद वार्ड 40 सोनू सोनकर इंद्रजीत यादव, शैलेश कुमार के साथ विभिनन राजनीति पाटिर्यों से जुड़े जन प्रतिनिधि सहित समाजसेवियों ने शिरकत किया जिसमें जिला अपराध निरोधक कमेटी के यमुनानगर ऊ टीम प्रभारी मनीष विश्वकर्मा और उनकी टीम से मीडिया प्रभारी वरिष्ठ पत्रकार राम जी केसरवानी विनोद केसरवानी मोहम्मद शनवर बलराम मिश्रा आदि उपस्थित रहे।

खाद्य कारोबारियों विरूद्ध 2 लाख 25 हजार का हुआ अर्थदण्ड

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
प्रतापगढ़। सहायक आयुक्त (खाद्य)-द्वितीय/अभिहित अधिकारी धीरेन्द्र प्रताप सिंह ने बताया है कि खाद्य सुरक्षा अधिकारियों द्वारा खाद्य सुरक्षा एवं मानक अधिनियम 2006 के अन्तर्गत खाद्य पदार्थो के नमूनें संग्रहित कर जांच हेतु खाद्य विश्लेषण प्रयोगशाला उ0प्र0 प्रेषित किये गये थे। जांच के पश्चात् खाद्य पदार्थो में मिलावट की पुष्टि खाद्य विश्लेषक द्वारा की गयी थी। खाद्य सुरक्षा अधिकारियों द्वारा रिपोर्ट प्राप्त करने के उपरान्त अपर जिलाधिकारी (वि0/रा0)/न्याय निर्णायक अधिकारी के न्यायालय में वाद प्रस्तुत किये गये थे। अपर जिलाधिकारी (वि0/रा0) त्रिभुवन विश्वकर्मा द्वारा सम्यक विचारोपरान्त 14 वादों में निणर्य देते हुये रूपये 2 लाख 25 हजार का अर्थदण्ड अधिरोपित किया गया। अर्थदण्ड समय से जमा न किये जाने पर आर0सी0 के माध्यम से वसूली की जायेगी। उन्होने बताया है कि जिन खाद्य कारोबारकर्ताओं पर अर्थदण्ड अधिरोपित किया गया है अमर नाथ केसरवानी निवासी ग्राम व पोस्ट रानीगंज कैथोला, लालगंज द्वारा मिथ्याछाप खाद्य पदार्थ पापड़ (मुनीम जी बाण्ड) विक्रय करने पर रूपये 5000, अरविन्द कुमार निवासी ग्राम व पोस्ट जोगीपुर थाना कन्धई तहसील पट्टी द्वारा अवमानक मिश्रित दूध विक्रय करने पर रूपये 5000, कामता प्रसाद पुत्र निवासी रोर पोस्ट व थाना बाघराय द्वारा स्टार्च युक्त कलाकन्द विक्रय करने पर रूपये 5000, अमित कुमार सिंह पुनिवासी ग्राम व पोस्ट भुपियामऊ द्वारा अवमानक पनीर विक्रय करने पर रूपये 5000, राजा राम निवासी कौलापुर पोस्ट गौरा द्वारा अवमानक मिश्रित दूध विक्रय करने पर रूपये 5000, अम्बुज मौर्या निवासी मदाफरपुर पोस्ट अतसरसण्ड द्वारा अवमानक पनीर विक्रय करने पर रूपये 5000, दिलीप कुमार यादव निवासी सराय जीतराय पोस्ट हींगपुर थाना मऊआइमा जनपद प्रयागराज द्वारा अवमानक मिश्रित दूध विक्रय करने पर रूपये 5000, सद्दीक निवासी पाइक रोड थाना कोतवाली नगर द्वारा अवमानक सेंवई (फेमिली ब्राण्ड) विक्रय करने पर रूपये 5000, अर्जुन कौशल निवासी ग्राम मोहनगंज द्वारा अवमानक आयोडीन नमक विक्रय करने पर रूपये 5000, आदित्य कुमार यादव निवासी धनुहा तहसील रानीगंज द्वारा अवमानक भैंस का दूध बिक्री करने पर रूपये 50000, राहुल यादव निवासी ग्राम देवासा तहसील रानीगंज द्वारा अवमानक मिश्रित दूध बिक्री करने पर रूपये 80000, सुधीर सिंह निवासी ग्राम व पोस्ट भदौसी गड़वारा द्वारा अवमानक मिश्रित दूध बिक्री करने पर रूपये 30000, विनोद कुमार निवासी ग्राम टेंऊगा पूरेललऊ द्वारा मिथ्याछाप ड्राई फ्रूट काजू का बिक्री करने पर रूपये 10000 तथा विजय कुमार सिंह निवासी ग्राम टेंऊगा पूरेललऊ द्वारा मिथ्याछाप ड्राई फ्रूट काजू का बिक्री करने पर रूपये 10000 अर्थदण्ड अधिरोपित किया गया।

राजस्व अभिलेखों के आनलाइन मुआयने की में प्रतापगढ़ प्रदेश में प्रथम

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
प्रतापगढ़। जिलाधिकारी संजीव रंजन ने कलेक्ट्रेट में बने अभिलेखागार में राजस्व अभिलेख पोर्टल प्रतापगढ़ का फीता काटकर शुभारम्भ किया। इस दौरान जिलाधिकारी ने बताया सिर्फ जनपद प्रतापगढ़ में राजस्व अभिलेख पोर्टल की आनलाइन व्यवस्था की गयी है, अभी किसी अन्य जनपदों में यह व्यवस्था लागू नही है। जमीन से सम्बन्धित अभिलेख जो काफी पुराने एवं जीर्ण-शीर्ण हो गये थे और उन रिकार्डो को ढूढ़ने में काफी परेशानी का सामना करना पड़ता था और समय भी ज्यादा लगता था, इन सबकों देखते हुये राजस्व अभिलेख पोर्टल की शुरूआत जनपद में की गयी है। जमीन से सम्बन्धित जितने भी पुराने अभिलेख पाये गये उनको स्कैन कराकर एक पोर्टल विकसित कर उसमें सभी रिकार्ड को संरक्षित किया गया है। नये पोर्टल के माध्यम से अधिवक्ताओं के लागिन से राजस्व अभिलेखों का मुआयना किया जा सकेगा, साथ ही अभिलेख की नकल प्राप्त करने हेतु पोर्टल पर आवेदन कर सकते है जिसमें अभिलेख के सही और गलत की जानकारी प्राप्त हो जायेगी और कार्यालय से अभिलेख की नकल अधिकतम 03 कार्य दिवस में प्राप्त कर सकते है। जनपद के 05 तहसीलों में से 03 तहसीलों क्रमशः कुण्डा, रानीगंज व लालगंज के पुराने राजस्व अभिलेख को आनलाइन कर दिया गया है एवं 02 तहसीलों सदर व पट्टी के राजस्व अभिलेख को आनलाइन करना अभी बाकी है इन रिकार्डो को जल्द से जल्द आनलाइन कराकर मॉडल रिकार्ड रूम एवं आनलाइन रिकार्ड रूम हो जायेगा। उन्होने कहा कि जमीन से सम्बन्धित पुरानी नकल को प्राप्त करने हेतु कहीं से भी आनलाइन करा सकते। पुराने राजस्व अभिलेख प्राप्त करने हेतु एक निर्धारित शुल्क जमा करना होगा। जिलाधिकारी ने राजस्व अभिलेख को पोर्टल पर आनलाइन कराने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने हेतु ई-डिस्ट्रिक्ट मैनेजर पुष्पेन्द्र यादव एवं अनुराग की प्रशंसा की। इस दौरान अधिवक्ताओं ने राजस्व अभिलेख पोर्टल की पहल पर जिलाधिकारी के प्रति आभार व्यक्त किया। इस अवसर पर मुख्य राजस्व अधिकारी राकेश कुमार गुप्ता व अधिवक्तागण उपस्थित रहे।

नैनी पुलिस चौकी छिवकी मैं हुआ भव्य मंदिर का शिलान्यास प्राण प्रतिष्ठा, यज्ञ, सुंदरकांड रुद्राभिषेक और आरती के साथ

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
प्रयागराज। थाना थरवई पुलिस टीम द्वारा दिनांक 12.03.2024 को 01 अभियुक्त आदित्य धनराज पुत्र स्व0 राममिलन सरोज निवासी ग्राम सहजीपुर थाना थरवई कमिशन्रेट प्रयागराज को थाना थरवई क्षेत्रान्तर्गत बैजूबाब पुलिया के पास से 10 लीटर अवैध कच्ची शराब के साथ गिरफ्तार किया गया । उक्त गिरफ्तारी/बरामदगी के आधार पर थाना थरवई पर मु0अ0सं0-58/2024 धारा-60 आबकारी अधिनियम पंजीकृत कर आवश्यक विधिक कार्यवाही की गयी । **गिरफ्तार अभियुक्त का विवरण-** आदित्य धनराज पुत्र स्व0 राममिलन सरोज निवासी ग्राम सहजीपुर थाना थरवई कमिशन्रेट प्रयागराज, उम्र करीब 19 वर्ष । **पंजीकृत अभियोग का विवरण-** मु0अ0सं0-58/2024 धारा-60 आबकारी अधिनियम थाना थरवई कमिशन्रेट प्रयागराज । **बरामदगी का विवरण-** 10 लीटर अवैध कच्ची शराब । **गिरफ्तारी करने वाली पुलिस टीम-** 1. उ0नि0 अमित कुमार चौबे, थाना थरवई कमिशन्रेट प्रयागराज । 2. का0 अनिल यादव, थाना थरवई कमिशन्रेट प्रयागराज ।

थाना घूरपुर पुलिस द्वारा 01 वारण्टी अभियुक्त गिरफ्तार

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
प्रयागराज। थाना घूरपुर पुलिस टीम द्वारा माननीय न्यायालय व्श् 3 इलाहाबाद के केस नं0 177/23 अ0सं0 112/14 धारा 60 आबकारी अधि0 से सम्बन्धित वारण्टी अभियुक्त नानबाबू उर्फ अभय प्रताप पटेल पुत्र शिव बाबू पटेल निवासी ग्राम पूरेखगन थाना घूरपुर प्रयागराज को आज दिनांक 14.03.2024 को ग्राम पूरेखगन थाना क्षेत्र घूरपुर से गिरफ्तार किया गया । नियमानुसार अग्रिम विधिक कार्यवाही की गयी । **गिरफ्तार वारण्टी का विवरण-** नानबाबू उर्फ अभय प्रताप पटेल पुत्र शिव बाबू पटेल निवासी पूरेखगन थाना घूरपुर प्रयागराज, उम्र करीब 41 वर्ष । **सम्बन्धित वारण्ट का विवरण-** केस नं0 177/23 अ0सं0 112/14 धारा 60 आबकारी अधि0, माननीय न्यायालय व्श् 3 इलाहाबाद । **पुलिस टीम का विवरण-** 1.उ0नि0 अमित कुमार थाना घूरपुर कमिशन्रेट प्रयागराज । 2.उ0नि प्रहलाद पाल थाना घूरपुर कमिशन्रेट प्रयागराज । 3.का0 आलोक कुमार थाना घूरपुर कमिशन्रेट प्रयागराज । 4.हे0का0 मनोज पासवान थाना घूरपुर कमिशन्रेट प्रयागराज ।

इलेक्शन कमिशन ऑफ इंडिया का प्रेस कॉन्ग्रेस शुरू

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
प्रयागराज। सात चरणों में होगा चुनाव 97 करोड़ मतदाता देंगे वोट 1.81 करोड़ नए वोटर,85 लाख लड़किया पहली बार वोट डालेगी 16 जून को सरकार का गठन होगा पहले चरण का चुनाव 19 अप्रैल से शुरू उत्तर प्रदेश में तीसरे, चौथे और पांचवें चरण में होगी वोटिंग सातवे चरण का चुनाव तारीख को होगा सभी राज्यों के उप चुनाव भी होंगे चार राज्यों के विधानसभा चुनावों को भी कराया जायेगा रिजल्ट 04 जून को घोषित होगा रिजल्ट घोषित होंगे इस बार चुनाव लड़ने वालों उम्मीदवारो का कैरेक्टर क्लियरेंस किया जाएगा उम्मीदवार को अपना क्रिमिनल रिकॉर्ड बताना होगा के किसी प्रकार के फर्क भाषण देने पर होगी कारवाई हिस्ट्रीशीतर और अंतरराष्ट्रीय बॉर्डर पर निगरानी की जाएगी पचासी साल के ऊपर के वोटर घर से देंगे वोट हर जिले में कंट्रोल रुम बनाए जाएगा सोशल मीडिया और ू न् पर रहेगी नजर प्रॉक्सी वोटिंग पर कसेंगे लगाम हिंसा करने वालों पर होगी सख्त कार्रवाई चार्टेड प्लेन और हेलीकॉप्टर पर रहेगी निगाह गलत खबर चलाने वालों नोडल अधिकारी का सकते है कार्रवाई आईटी एक्ट के तहत रहेगा अधिकार चुनाव प्रचार में सीमा न लांघे पॉलिटिकल पार्टी राजनीतिक पाटिर्यों को एडवाजरी जारी कर दी गई है।

जनपद स्तरीय सामुदायिक शैक्षिक उन्मुखीकरण कार्यक्रम सम्पन्न

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
सोनभद्र। शनिवार को जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान सभागार में जनपद स्तरीय सामुदायिक शैक्षिक उन्मुखीकरण कार्यक्रम का आयोजन मुख्य विकास अधिकारी सौरभ गंगवार की अध्यक्षता में संपनन हुआ। कार्यक्रम का शुभारंभ सहित उप शिक्षा निदेशक/ डायट प्राचार्य एवं जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी द्वारा मां सरस्वती की प्रतिमा पर पूजन अर्चन एवं दीप प्रज्ज्वलन से किया गया। इस आयोजन में शैक्षिक सत्र 2023,24 में बेसिक शिक्षा विभाग द्वारा समग्र शिक्षा अभियान के विभिनन घटकों से संबंधित उपलब्धियों व आगामी चुनौतियों पर परिचर्चा सत्र आयोजित किया गया। आज के इस कार्यक्रम में इझऊ के माध्यम से ऐंउ संजय मिश्र द्वारा निपुण भारत मिशन के विविध घटकों , ऐंउ विद्यासागर द्वारा विद्यालय प्रबंध समिति(एशण्)के क्रियान्वयन एवं ऐंउविनोद कुमार द्वारा ऑपरेशन कायाकल्प के विविध विषय बिंदुओं पर व्यापक पर चर्चा की गई । जिला समन्वयक सामुदायिक शिक्षा जय किशोर वर्म द्वारा शारदा अभियान के अंतर्गत आउट ऑफ स्कूली बच्चों को शिक्षा की मुख्य धारा से जोड़ने एवं डीबीटी के माध्यम से धनराशि संप्रेषण के विविध पक्षों पर चर्चा की गई ।इस आयोजन में हिंदी विषर्यझ् संजय जयसवाल एवं अन्य साथियों के द्वारा ठ स्कूल की ओरठ लघु नाटिका के माध्यम से बेसिक शिक्षा विभाग की चुनौतियां को रेखांकित किया गया। कार्यक्रम के अंतिम चरण में मुख्य विकास अधिकारी सौरभ गंगवार द्वारा वर्तमान में शिक्षकों के समक्ष आने वाली नई चुनौतियां पर जीत हासिल करने हेतु सभी के विश्वास के मूल मंत्र के साथ कार्य करने की प्रेरणा व शुभकामनाएं दी गई। आज के आयोजन में जिला समन्वयक जय किशोर वर्मा द्वारा नवागत खंड शिक्षा अधिकारी का माल्यार्पण कर जनपद में स्वागत किया गया ।कार्यक्रम के अंत में जिला बेपाठक सिक शिक्षा अधिकारी नवीन कुमार द्वारा प्रदेश स्तर पर जनपद की बेसिक शिक्षा विभाग की रैंकिंग को और बेहतर बनाने हेतु रणनीति बनाकर मिलकर प्रयास करने की आवश्यकता पर बोलते हुए कार्यक्रम में उपस्थित मुख्य विकास अधिकारी , डायट प्राचार्य को धन्यवाद ज्ञापित किया गया ।

आचार संहिता लागू होते ही हटवाए गये शहर से राजनीतिक पोस्टर

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
सोनभद्र। लोकसभा चुनाव का बिगुल बजते ही आज सोनभद्र जापनपद के बडौली चौराहे पर बडौली चौक गली एवं अन्य चट्टी चौराहों पर लगाए गए पोस्टर बैनर को नगर पालिका के अधिशाषी अधिकारी विजय यादव के नेतृत्व में नगर पालिका के कमिर्यों के द्वारा पोस्टर बैनर उतार दिए गए। इसके बाद उप जिला अधिकारी एवं पुलिस उपाधीक्षक नगर कई कई जगहों पर पहुंचे, वहां बड़ी-बड़ी होर्डिंग बैनर एवं प्रचार प्रसार के विभिनन तरह के

को आदर्श आचार संहिता के पालन को लेकर उपजिलाधिकारी निखिल यादव एवं पुलिस उपाधीक्षक नगर राहुल पांडेय सक्रिय हो गए। दोनों अधिकारियों के नेतृत्व में राबर्ट्सगंज कस्बे के लगे पोस्टरों को फड़वा दिया। उप जिलाधिकारी ने निर्देश दिया कि आगामी लोकसभा चुनाव को सकुशल संपनन कराने के लिए आचार संहिता का पालन आवश्यक है।

ग्लूकोमा सप्ताह में 55 मरीजों की हुई जांच

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
सोनभद्र। जिला अस्पताल परिसर में ग्लूकोमा सप्ताह अंतर्गत शनिवार को नेत्र शिविर निशुल्क जांच दवा कैंप आयोजित किया गया जिसमें लगभग 55 लोगों की जांच की गई जिनमें गंभीर बीमारी देखते हुए 10 लोगों को सर्जरी करने को सलाह दी गई वहीं सभी मरीजों को दवा वितरित कर जानकारी दी गई। वरिष्ठ नेत्र चिकित्सक डॉक्टर केके पांडेय ने बताया कि ग्लूकोमा सप्ताह पिछले 11 मार्च से 16 मार्च तक विशेष अभियान चलाया गया जिसमें शनिवार को लगभग 55 मरीज आए वही सभी मरीजों के जांच कर कर दवाइयां उपलब्ध कराई गई जिनमें 10 मरीजों की गंभीर बीमारी देखते हुए सर्जरी करने की सलाह दी गई डॉक्टर के के पांडे ने बताया कि हफ्ते में मोतियाबिंद आपरेशन व जांच को लेकर सोमवार से शुक्रवार तक विशेष अभियान चलाया जाता है सुबह 9:00 से 2:00 बजे तक चिकित्सक द्वारा जांच कर ऑपरेशन दवा के लिए सुझाव भी दिए जाते हैं इस दौरान लगभग प्रतिदिन औसत 20 से 25 मरीजों की दवा इलाज किए जाते हैं इस मौके पर डॉ वी के श्रीवास्तव, डॉ रशमी, डॉ अभिषेक , डॉ संदीप कुमार, चिकित्सक ऑप्टोमेट्रिस्ट पारसनाथ,फार्मासिस्ट तन्तीवारी अन्य कर्मचारी मौजूद रहे।

धूमधाम से कक्षा 8 के छात्राओं की हुई विदाई किए गए सम्मानित

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
सोनभद्र। करमा ब्लाक के कम्पोजिट विघालय तकिया दरगाह,में शनिवार को धूमधाम से की गई कक्षा 8 के बच्चों का विदाई कार्यक्रम हुआ सम्पनन।मुख्य अतिथि प्रधानाचार्य सुषमा शुक्ला द्वारा कार्यक्रम के शुभारंभ मां सरस्वती की दीप प्रज्वलित कर पूजन अर्चन कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया इस दौरान प्रधानाचार्य सुषमा शुक्ला ने बताया कि कक्षा 8 के छात्र-छात्राओं की विदाई समारोह धूमधाम से की गई जिसमें नन्हे मुनने बच्चों द्वारा नित्य गायन नाटक प्रस्तुत कर उनके जीवन के उज्जवल भविष्य की कामना की गई वही श्री शुक्ल ने बताया कि बच्चों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम करने के दौरान विदाई के गम को भी देखा गया,बच्चों व शिक्षकों कि आंखें हुई नम। मौके पर सहायक अध्यापक मु0 वकिल, तहशीन फातिमा, शाइस्तानूर,अनुदेशक रवीन्द्र बहादुर सिंह, बृजेश मिश्रा,सविता शर्मा, शिक्षामित्र रामसुंदर व अयाज अहमद बच्चों के विदाई के दौरान दुसरे विघालय में जाने के सम्बंधित विशेष जानकारी भी दिया गया।

कार्यालय जिलाधिकारी, सोनभद्र

सावधान!

सावधान!

(आबकारी विभाग)

अवैध शराब के सेवन से बचे।

अपील

आगामी लाकेसभा सामान्य निर्वाचन-2024 तथा होली पर्व के सन्निकट होने के दृष्टिगत जनसाधारण को सूचित किया जाता है कि अवैध अड्डों से बिकने वाली अवैध मदिरा का सेवन कदापि न करे, क्योकि अवैध अड्डों से मिलने वाली मंदिरा जहरीली हो सकती है। उत्तर प्रदेश मे वैध शराब पाउच में नही बिकती है। इसलिए अपने परिवार की सुरक्षा कों ध्यान में रखते हुए अधिकृत आबकारी ठेके से ही बारकोड/क्यू0आर0 कोड एवं सील लगी बोतल खरीदें। पाउच वाली महुए से बनी शराब किसी भी हालत में न खरीदें क्योकि यह पूर्णतया नकली एवं जानलेवा है। अवैध शराब तथा निर्धारित मूल्य से अधिक की बिक्री से सम्बन्धित सूचना निम्न फोन नम्बरों पर दी जा सकती है:-

1. जिला आबकारी अधिकारी, सोनभद्र। मो0 नं0- 9454465619
2. आबकारी निरीक्षक, क्षेत्र-1 राबर्ट्सगंज, सोनभद्र। मो0 नं0-8299436851
3. आबकारी निरीक्षक, क्षेत्र-2 दुद्धी, सोनभद्र। मो0 नं0-8423636665
4. आबकारी निरीक्षक, क्षेत्र-3 घोरावल, सोनभद्र। मो0 नं0-8800807279

उक्त के अतिरिक्त अवैध मदिरा के निर्माण/बिक्री के सम्बन्ध में शिकायत विभागीय टोल फ्री नम्बर 14405 एवं व्हाटस एप नम्बर-945446601 पर की जा समती है।

जिला आबकारी अधिकरी,
सोनभद्र।

जिलाधिकारी
सोनभद्र।

संख्याः- 257/11-13/जि0आ0अ0/अपील/सोनभद्र/2023-24 दिनांक

भारतीय क्रिकेट के लिए ऐतिहासिक दिन जसप्रीत बुमराह ने नंबर-1 गेंदबाज बनकर रच दिया इतिहास

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

नई दिल्ली। जसप्रीत बुमराह आईसीसी द्वारा बुधवार को जारी ताजा टेस्ट रैंकिंग में नंबर-1 गेंदबाज बन गए हैं। बुमराह के नंबर-1 बनते ही भारत ने इतिहास रच दिया। यह पहला मौका है जब भारतीय तेज गेंदबाज आईसीसी टेस्ट रैंकिंग में शीर्ष स?थान पर पहुंचा हो। जसप्रीत बुमराह ने विशाखापट्टनम टेस्ट में इंग्लैंड के खिलाफ कुल 9 विकेट झटके, जिसके कारण उन?हें काफी फायदा हुआ।आईसीसी ने बुधवार को ताजा टेस्ट रैंकिंग जारी की जिसमें जसप्रीत बुमराह ने इतिहास रच दिया है। जसप्रीत बुमराह आईसीसी टेस्ट गेंदबाजी रैंकिंग में नंबर-1 बन गए हैं। भारतीय क्रिकेट के लिए यह ऐतिहासिक दिन है। यह पहला मौका है जब भारतीय तेज गेंदबाज नंबर-1 टेस्ट गेंदबाज बना है। रविचंद्रन अश्विन को रैंकिंग में नुकसान हुआ और वो तीसरे स्थान पर खिसक गए हैं।बुमराह के शानदार प्रदर्शन के दम पर भारत ने इंग्लैंड को दूसरे टेस्ट में 106 रन से मात देकर सीरीज 1-1 से बराबर की। बुमराह को इस प्रदर्शन के दम पर तीन स्थान का फायदा हुआ और वो गेंदबाजी रैंकिंग में शीर्ष स्थान पर पहुंचे। बुमराह के फायदे से हालांकि रविचंद्रन अश्विन को तगड़ा नुकसान हुआ।रविचंद्रन अश्विन ने पिछले साल मार्च से शीर्ष स्थान पर कब्जा कर रखा था। वो इंग्लैंड के खिलाफ दूसरे टेस्ट में केवल तीन विकेट ले सके और इसी कारण उन्हें दो स्थान का नुकसान हुआ। अश्विन ताजा रैंकिंग्स में दो

स्थान के नुकसान के साथ तीसरे स्थान पर पहुंच गए हैं। दक्षिण अफ्रीका के तेज गेंदबाज कगिसो रबाडा दूसरे स्थान पर बरकरार है।जसप्रीत बुमराह पहली बार टेस्ट रैंकिंग में नंबर-1 बने। 30 साल के तेज गेंदबाज की इससे पहले सर्वश्रेष्ठ रैंकिंग तीसरा स्थान थी। बुमराह चौथे भारतीय खिलाड़ी हैं, जिन्होंने नंबर-1 स्थान हासिल किया। इससे पहले रविचंद्रन अश्विन, रवींद्र जडेजा और बिशन सिंह बेदी ही नंबर-1 टेस?ट गेंदबाज रहे हैं।अन्य गेंदबाजों के प्रदर्शन पर नजर डाले तो श्रीलंकाई स्पिनर प्रभात जयसूर्या तीन स्थान के फायदे के साथ छठे स्थान पर पहुंच गए हैं। असित फर्नांडो सात स्थान के सुधार के साथ 34वें नंबर पर पहुंच गए है।न्यूजीलैंड के पूर्व कप्तान केन विलियमसन टेस्ट बल्लेबाजी रैंकिंग में नंबर-1 पर बरकरार हैं। भारत के युवा ओपनर यशस्वी जायसवाल ने 37 स?थानों की छलांग लगाई और अब वो 29वें नंबर पर पहुंच गए हैं। ऑस्ट्रेलिया के स्टीव स्मिथ दूसरे जबकि जो रूट तीसरे स्थान पर हैं। जैक क्रॉली आठ स्थान के फायदे के साथ 22वें नंबर पर पहुंच गए हैं।

कौन हैं सचिन दास तेंदुलकर से प्रेरित होकर रखा गया नाम; अंडर-19 वर्ल्ड कप के हीरो की हर तरफ हो रही चर्चा

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

नई दिल्ली। भारतीय टीम के युवा बल्लेबाज सचिन दास की हर तरफ चर्चा हो रही है। होगी भी क?यों नहीं, इस युवा बल्लेबाज ने मंगलवार को दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ शानदार पारी खेलकर भारत को अंडर-19 वर्ल्ड कप 2024 फाइनल में पहुंचाने में अहम भूमिका जो निभाई।भारतीय अंडर-19 टीम ने मंगलवार को दक्षिण अफ्रीका को 2 विकेट से मात देकर आईसीसी अंडर-19 वर्ल्ड कप 2024 के फाइनल में प्रवेश किया। भारतीय टीम की जीत के हीरो युवा सचिन दास रहे जिन्होंने 95 गेंदों में 11 चौके और एक छक्के की मदद से 96 रन बनाए। उन्होंने कप्तान उदय सहारन के साथ पांचवें विकेट के लिए रिकॉर्ड 171 रन की साझेदारी की।सचिन

दास ने बेनोनी में खेले गए अंडर-19 वर्ल्ड कप 2024 के सेमीफाइनल मुकाबले में दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ 95 गेंदों में 11 चौके और एक छक्के की मदद से 96 रन बनाए। उन्होंने कप?तान उदय सहारन के साथ मिलकर पांचवें विकेट के लिए रिकॉर्ड 171 रन की साझेदारी की।सचिन दास जब क्रीज पर आए तब भारतीय टीम 32/4 के स्कोर पर संघर्ष कर रही थी। यहां से सहारन के साथ दास ने शानदार साझेदारी की और भारतीय टीम फाइनल में पहुंचने में सफल हुई।सचिन दास महाराष्ट्र के बीड़ में मराठवाड़ा क्षेत्र के हैं। दास को तब पहचान मिली जब 2023 महाराष्ट्र प्रीमियर लीग में उन्होंने केदार जाधव के नेतृत्व वाली कोल्कापुर टस्कर्स का प्रतिनिधित्व किया था। इसके बाद अंडर-19 वर्ल्ड कप में दास ने सुखिऱ्यां बटोरी, जब उन्होंने नेपाल के खिलाफ सुपर सिक्स मैच में शतक जमाया।हालांकि, सेमीफाइनल में दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ युवा दास ने दिखाया कि वो इस खेल में कुछ बड़ा करने आए हैं। काफी समझदारी से अपनी पारी आगे बढ़ाने वाले दास की हर तरफ चर्चा हो रही है।सचिन दास के पिता संजय ने खुलासा किया कि वो सुनील गावस्कर और सचिन तेंदुलकर के बड़े प्रशंसक रहे हैं। संजय ने कहा कि उन्होंने अपने बेटे का नाम तेंदुलकर से प्रेरित होकर रखा। संजय महाराष्ट्र सरकार के स्वास्थ्य विभाग में कार्यरत है। दास ने 10 नंबर की जर्सी भी इसलिए पहनी है क्योंकि वो सचिन तेंदुलकर के बड़े चाहने वाले है।मैं सुनील गावस्कर का बड़ा प्रशंसक हूं, लेकिन मैंने अपने बेटे का नाम दूसरे पसंदीदा सचिन तेंदुलकर के नाम पर रखा है। ऐसा इसलिए क्योंकि वो तेंदुलकर के साथ खुद को जोड़ सकता है। अभी इसकी पीढ़ी गावस्कर सर को क्या समझेगी वो नंबर-10 जर्सी इसलिए पहनता है क्योंकि तेंदुलकर को बहुत मानता है।

न्यूजीलैंड ने दर्ज की अपने टेस्ट इतिहास की दूसरी सबसे बड़ी जीत, दक्षिण अफ्रीका को पहले मैच में बुरी तरह रौंदा

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

नई दिल्ली। न्यूजीलैंड ने बुधवार को दक्षिण अफ्रीका को पहले टेस्ट में 281 रन के विशाल अंतर से मात दी। न्यूजीलैंड की यह रन के मामले में दूसरी सबसे बड़ी टेस्ट जीत रही। टिम साउदी के नेतृत्व वाली न्यूजीलैंड ने इस जीत के साथ ही दो मैचों की सीरीज में 1-0 की बढ़त बनाई।न्यूजीलैंड ने बुधवार को माउंट मॉनगनुई में खेले गए पहले टेस्ट में दक्षिण अफ्रीका को 281 रन के विशाल अंतर से हरा दिया। न्यूजीलैंड ने रन के मामले में अपने टेस्ट इतिहास की दूसरी सबसे बड़ी जीत दर्ज की। न्यूजीलैंड की जीत में केन विलियमसन चमके जिन्होंने दोनों पारियों में शतक ठोके। रचिन रवींद्र को उनके शानदार प्रदर्शन के लिए प्लेयर ऑफ द मैच चुना गया।बता दें कि माउंट मॉनगनुई में खेले गए मुकाबले में न्यूजीलैंड ने पहले बल्लेबाजी की और उसकी पहली पारी 511 रन पर ऑलआउट हुई। जवाब में दक्षिण अफ्रीका की पहली पारी केवल 162 रन पर ढेर हुई। इस तरह मेजबान टीम को पहली पारी के आधार पर 349 रन की विशाल बढ़त मिली।कीवी टीम ने अपनी दूसरी पारी 179/4 के स्कोर पर घोषित करके दक्षिण अफ्रीका के सामने 529 रन का विशाल लक्ष्य रखा। प्रोटियाज टीम की दूसरी पारी 247 रन पर ऑलआउट हुई और वो मुकाबला विशाल अंतर से गंवा बैठी। न्यूजीलैंड के ऑलराउंडर रचिन रवींद्र को प्लेयर ऑफ द मैच चुना गया।529 रन के विशाल लक्ष्य का पीछा करने उतरी दक्षिण अफ्रीका की शुरुआत बेहद खराब रही। टिम साउथी ने दक्षिण अफ्रीका के कप्तान नील ब्रांड (3) को क्लीन बोल्ड कर दिया। इसके बाद मैट हेनरी ने एडवर्ड मूर को खाता भी नहीं खोलने दिया और कॉनवे के हाथों कैच आउट कराकर मेहमान टीम को दूसरा झटका दिया।रायनार्ड वान टोंडर (31) और जुबैर हमजा (36) ने पारी को संभालने का प्रयास किया और तीसरे विकेट के लिए 63 रन की साझेदारी की। तभी काइल जैमिसन ने अपनी रफ्तार का जादू दिखाया और टोंडर व हमजा को पांच रन के अंतराल में पवेलियन पहुंचा दिया।दक्षिण अफ्रीका ने 73 रन पर चार विकेट गंवा दिए थे। तब डेविड बेडिंगघम (87) और कीगन पीटरसन (16) ने पांचवें विकेट के लिए 105 रन की शतकीय साझेदारी की। यहां एक बार फिर जेमिसन ने अपनी गति का फायदा उठाया और दोनों बल्लेबाजों को तीन रन के अंतराल में पवेलियन की राह दिखा दी। जेमिसन ने बेडिंघम को सैंटनर जबकि पीटरसन को रवींद्र के हाथों कैच आउट कराया।इसके बाद मिचेल सैंटनर ने दक्षिण अफ्रीका के पुछल्ले बल्लेबाजों को अपना शिकार बनाकर दक्षिण अफ्रीका की दूसरी पारी 80 ओवर में 247 रन पर समेट दी।

अनिल कुंबले के 10 विकेट के अनसुने किस्से सचिन तेंदुलकर का कामयाब टोटका, पाक खिलाड़ी की नाकाम साजिश

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

नई दिल्ली। भारतीय टीम के महान लेग स्पिनर अनिल कुंबले ने 25 साल पहले आज ही के दिन ऐसा कमाल किया था कि क्रिकेट प्रेमियों की खुशी का ठिकाना नहीं रहा था। कई क्रिकेट प्रेमी आज भी इस बात को स्वीकार करते हैं कि उस पल को देखकर उत्साह से रोंगटे खड़े हो जाते हैं और अब भी यह पल रोमांच?ित कर उठता है।अनिल कुंबले ने 25 साल पहले आज ही के दिन दिल्ली के फिरोजशाह कोटला स्टेडियम पर इतिहास रचा था। कुंबले ने पाकिस्तान के सभी 10 विकेट लेकर भारत को ऐतिहासिक जीत दिलाई थी। भारतीय लेग स्पिनर के 10 विकेट लेने के पीछे के कई अनसुने किस्से हैं जो हम आपको बताने वाले हैं। कुंबले एक पारी में 10 विकेट लेने वाले पहले भारतीय और दुनिया के दूसरे गेंदबाज बने थे।जी हां, हम उसी पल की बात कर रहे हैं, जब कुंबले ने एक पारी में 10 विकेट लेकर भारत वासियों को गर्व महसूस कराया था। 7 फरवरी 1999 को दिल्ली के फिरोजशाह कोटला स्टेडियम पर अनिल कुंबले ने अपनी फिरकी के जादू में पाकिस्तानी

बल्लेबाजों को उलझाया और एक के बाद एक पूरे 10 विकेट ले डाले।भारत-पाकिस्तान मैच हो तो बताने की जरुरत नहीं कि धड़कनों का क?या हाल होगा। 7 फरवरी 1999 को दूसरा टेस्ट खेला जा रहा था। भारतीय टीम सीरीज में 0-1 से पीछे थी। भारत ने दिल्ली में पहले बल्लेबाजी की और उसकी पहली पारी 252 रन पर ऑलआउट हुई। जवाब में पाकिस्तान की पहली पारी केवल 172 रन पर ढेर हो गई। अनिल कुंबले सबसे ज्यादा अंधविश्वास से परहेज नहीं करते थे। उन्हें लगा कि यह टोटका काम आ रहा है। उन?होंने कुंबले के हर ओवर से पहले उनका स्वेटर और टोपी लेना शुरू किया व अंपायर को जाकर देते।इसका असर ये रहा कि कुंबले ने 10 विकेट लेकर कोटला स्टेडियम पर इतिहा रच दिया। कुंबले ने एक पारी में सभी 10 विकेट चटका दिए। उनका गेंदबाजी स्पेल रहा- 26.3 ओवर में 9 मेडन सहित 74 रन देकर 10 विकेट। चार विकेट झटके।भारत को पहली पारी के आधार पर 80 रन की बढ़त मिली। मेजबान टीम की दूसरी पारी 339 रन पर सिमटी और इस तरह पाकिस्तान को मैच जीतने के लिए 420 रन का लक्ष्य मिला। पाकिस्तान को शाहिद अफरीदी (41) और सईद अनवर (69) की जोड़ी ने 101 रन की साझेदारी करके मजबूत शुरुआत दिलाई।पाकिस्तान की टीम लक्ष?य की ओर मजबूती से आगे बढ़ रही थी, तब सचिन तेंदुलकर का एक टोटका काम आ गया। तेंदुलकर ने एक टॉक शो में बताया था कि 24 ओवर हो गए थे और भारतीय टीम विकेट लेने में नाकाम रही थी। अनिल कुंबले को गेंदबाजी के लिए बुलाया गया। सचिन तेंदुलकर ने कुंबले का स्वेटर और टोपी ली और अंपायर को जाकर सौंप दी। ऐसा इसलिए ताकि गेंदबाज सीधे अपने रन-अप पर जाकर गेंदबाजी की तैयारी करे।25वें ओवर में कुंबले ने शाहिद अफरीदी को विकेटकीपर मोंगिया के हाथों कैच आउट करा दिया। अगली ही गेंद पर उन्होंने एजाज अहमद को एलबीडब्ल्यू आउट करके भारत की मैच में वापसी करा दी। तेंदुलकर अपने खेलने वाले दिनों में

अंडर 19 वर्ल्ड कप 2024 भारत ने साउथ अफ्रीका को चटाई धूल, 9वीं बार कटाया वर्ल्ड कप फाइनल का टिकट

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

नई दिल्ली। भारत और साउथ अफ्रीका के बीच अंडर 19 वर्ल्ड कप 2024 का सेमीफाइनल मुकाबला मंगलवार को खेला गया। इस मैच में भारत ने टॉस जीतकर पहले गेंदबाजी का फैसला किया। पहले बैटिंग करते हुए साउथ अफ्रीका की टीम ने 50 ओवर में 7 विकेट के नुकसान पर 244 रन बनाए।भारतीय टीम ने साउथ अफ्रीका को आईसीसी वर्ल्ड कप 2024 के सेमीफाइनल मैच में 2 विकेट से पटखनी दी और फाइनल में प्रवेश कर लिया। भारत ने इस जीत के साथ ही 9वीं बार अंडर19 विश्व कप के फाइनल में एंटर किया। इस मैच में कप्तान उदय सहारन और सचिन दास ने शानदार परफॉर्मेंस किया और भारत को ये जीत दिलाई।साउथ अफ्रीका की तरफ से विकेटकीपर बल्लेबाज लुआन ड्री प्रीटोरियस का बल्ला जमकर गरजा। उन्होंने मैच में 76 रन बनाए और वह शीर्ष स्कोरर रहे। इसके जवाब में भारत की तरफ से कप्तान उदय सहारन और सचिन दास के बीच शानदार शतकीय साझेदारी हुई और भारत ने ये मैच 2 विकेट से जीत लिया। इस जीत के साथ ही भारत ने लगातार पांचवीं बार अंडर19 विश्व कप के फाइनल का टिकट कटाया।दरअसल, भारतीय टीम ने अंडर19 विश्व कप 2024 के टूर्नामेंट में लगातार छठी बार जीत हासिल की। साउथ अफ्रीका को हराकर भारत ने आईसीसी अंडर19 विश्व कप 2024 के फाइनल में प्रवेश किया।भारत की शुरुआत बेहद ही खराब रही थी।

पाकिस्तान क्रिकेट में सेलेक्शन के तरीके से झल्ला गया भारी भरकम क्रिकेटर, टीम प्रबंधन को जमकर लगाई लताड़

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

नई दिल्ली। हर खिलाड़ी का सपना होता है कि वह अपनी नेशनल टीम की तरफ से खेले। कुछ ही खिलाड़ी ऐसे होते है, जिन्हें ये सुनहरा मौका मिलता है, लेकिन मौका मिलने के बाद भी खिलाड़ी अपनी फॉर्म की वजह से टीम से लगातार अंदर बाहर किए जाते हैं।आजम खान ने पाकिस्तान टीम मैनेजमेंट को उन्हें लगातार मौके ना देने और उनकी काबिलियत पर भरोसा नहीं जताने पर जमकर लताड़ लगाई है। पाकिस्तान का ये भारी भरकम क्रिकेटर अक्सर अपने मोटापे के चलते ट्रोलर्स के निशाने पर रहता है लेकिन लगातार मौके नहीं मिलने पर वह टीम मैनेजमेंट से खफा है। आइए जानते है आजम खान ने क्या कहा कुछ खिलाड़ी नजरअंदाज किए जाने के बाद शानदार तरीके से कमबैक करते हैं, जबकि कुछ प्लेयर्स टीम मैनेजमेंट के इस फैसले से काफी निराश हो जाते हैं। हाल ही में पाकिस्तान टीम के विकेटकीपर बल्लेबाज आजम खान के साथ ऐसा ही कुछ हो रहा है, जिन्हें टीम मैनेजमेंट लगातार मौके नहीं दे रही। इस कड़ी में आजम खान ने पाकिस्तान टीम मैनेजमेंट को लेकर तीखा प्रतिक्रिया दी है।दरअसल, आजम खान ने पाकिस्तान टीम मैनेजमेंट को उन्हें लगातार मौके ना देने और उनकी काबिलियत पर

भरोसा नहीं जताने पर जमकर लताड़ लगाई है। पाकिस्तान का ये भारी भरकम क्रिकेटर अक्सर अपने मोटापे के चलते ट्रोलर्स के निशाने पर रहता हैं, लेकिन लगातार मौके नहीं मिलने पर वह टीम मैनेजमेंट से खफा है।बता दें कि 25 साल के विकेटकीपिंग बल्लेबाज को मैदान पर बड़े-बड़े शॉट्स लगाते हुए देखा जाता हैं और साल 2021 में पाकिस्तान के लिए टी20घ् डेब्यू करने के बाद उन्होंने अब तक सिर्फ 8 टी20 मैच खेले हैं, क्योंकि वह बहुत बार टीम से बाहर और अंदर रहे।

परिवार की वजह से टीम से वापस लिया नाम, अब वापसी के लिए जी-तोड़ मेहनत कर रहा है ये भारतीय स्टार

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

नई दिल्ली। आईपीएल 2024 को लेकर तैयारियां शुरू हो गई है। सभी 10 टीमों ने अपनी-अपनी तैयारियां शुरू कर दी है। सीएसके टीम के धुरंधर दीपक चाहर ने भी हाल ही में सोशल मीडिया पर अपनी प्रैक्टिस का एक वीडियो शेयर किया है जो काफी ज्यादा वायरल हो रहा हैं।टीम इंडिया के तेज गेंदबाज दीपक चाहर एक बार फिर से कमबैक करने के लिए तैयार हैं। उन्होंने वापसी के लिए अपनी ट्रेनिंग शुरू कर दी है। हाल ही में एक वायरल वीडियो में दीपक चाहर मैदान पर टायर खींचते हुए नजर आए और इस ट्रेनिंग से स्ट्रेंथ और स्टेमिना पर वह काम कर रहे हैं। उनका ये वीडियो देख हर कोई हैरान है।दीपक चाहर वायरल वीडियो में कमर पर टायर बांधकर मैदान पर जी तोड़ मेहनत कर रहे हैं। बीते कुछ समय से दीपक चाहर फिटनेस की वजह से टीम से बाहर रहे, लेकिन हाल ही में वह पिता की अचानक तबीयत खराब होने की वजह से टीम से दूर हुए। अब उन्होंने आईपीएल 2024 के लिए अपनी तैयारियां शुरू कर दी हैं।दरअसल, टीम इंडिया के तेज गेंदबाज दीपक चाहर एक बार फिर से कमबैक करने के लिए तैयार हैं। उन्होंने वापसी के लिए अपनी ट्रेनिंग शुरू कर दी है। हाल ही में एक वायरल वीडियो में दीपक चाहर मैदान पर टायर खींचते हुए नजर आए और इस ट्रेनिंग से स्ट्रेंथ और स्टेमिना पर वह काम कर रहे है।दीपक ने वीडियो शेयर करते हुए इंस्टाग्राम पर कैप्शन में लिखा कि हार नहीं मानूंगा रार नहीं ठानूंगा। इस दौरान उन्होंने जय बजरंग बली भी लिखा है।बता दें कि दीपक चाहर को साउथ अफ्रीका दौरे के लिए भारतीय टीम में जगह मिली थी, लेकिन उन्होंने पिता के अचानक तबीयत खराब होने की वजह से उन्होंने टीम से नाम वापस ले लिया था। दीपक के पिता को ब्रेन स्ट्रोक हुआ और इसकी वजह से दीपक तुरंत अपने घर रवाना हुए।बता दें कि दीपक चाहर के पिता लोकेंद्र सिंह चाहर वायुसेना में थे। दीपक को क्रिकेटर बनाने के लिए उन्होंने अपनी नौकरी तक छोड़ दी। दीपक ने भी पिता की खातिर भारतीय टीम में जगह बनाई। दक्षिण अफ्रीका में होने वाली टी-20 और एकदिवसीय सीरीज में भी टीम में चुने गए थे। दीपक ने आस्ट्रेलिया के साथ खेली गई टी-20 श्रंखला में एक साल बाद अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में वापसी की, लेकिन सीरीज के दौरान पिता की तबीयत खराब देख वह तुरंत घर लौटे।

भारतीय टीम को राजकोट टेस्ट से पहले इन प्रमुख कमियों को करना होगा दूर, एक गलती भी पड़ जाएगी भारी

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

नई दिल्ली। इंग्लैंड के विरुद्ध विशाखापत्तनम में बड़ी जीत के साथ भले ही भारतीय टीम ने सीरीज में वापसी कर ली हो, लेकिन इस टेस्ट में टीम की कई कमियां उजागर हुईं। पांच टेस्ट मैचों की सीरीज का तीसरा मुकाबला राजकोट में 15 फरवरी से खेला जाएगा और टीम के पास 10 दिनों का समय है। इंग्लैंड की टीम पलटवार में माहिर है और अगर भारत को टेस्ट सीरीज जीतनी है तो उसे इन कमियों को दूर करना होगा।भारत और इंग्लैंड के बीच पांच मैचों की सीरीज का तीसरा टेस्ट 15 फरवरी से राजकोट में शुरू होगा। भारत और इंग्लैंड दोनों की कोशिश सीरीज में बढ़त बनाने की होगी। भारतीय टीम को राजकोट टेस्ट से पहले अपनी कई गलतियों को सुधारना होगा नहीं तो उसकी राह मुश्किल हो जाएगी। दोनों टीमों के पास 10 दिन का समय है तो तैयारी करने का शानदार मौका है।अगर दोनों मैच देखें तो भारतीय टीम एक बल्लेबाजी इकाई के रूप में प्रदर्शन नहीं कर सकी है। बल्लेबाजों के व्यक्तिगत प्रदर्शन से टीम दूसरा मैच जीतने में सफल रही।

इस सप्ताह की शुरुआत प्रसन्नता के साथ होगी। लेकिन बातचीत में संवत रहें। शिक्षा से जुड़े काम पर ध्यान देने की आवश्यकता है। धैर्य रखना होगा। भागदौड़ बनी रहेगी।	इस सप्ताह आत्म संवत रहने की आवश्यकता है। मन परेशान रहेगा। गुस्सा पर नियंत्रण रखना होगा। परिवार का साथ मिलेगा। लाभ के	मन में आशा-निराशा बनी रहेगी। नकारात्मक विचारों से बचें। स्वास्थ्य का ध्यान रखने की आवश्यकता है। शत्रुओं पर विजय प्राप्त करेंगे। नौकरी में कार्यभार में बढ़ोतरी	सप्ताह के शुरूआत से वाणी में मधुरता रहेगी, लेकिन धैर्यशीलता बनाए रखने की कोशिश करें। शिक्षा से जुड़े कामों में सफलता मिलेगी। संतान के स्वास्थ्य का ध्यान रखना
सप्ताह के पहले दिन से मन में उतार-चढ़ाव बना रहेगा। नौकरी में तरक्की मिलने की संभावना है। शासन सत्ता का योग बन रहा है। भवन सुख मिलेगा। शिक्षा से जुड़े काम में	इस सप्ताह कार्यक्षेत्र में मेहनत ज्यादा होगी। परिवार की जिम्मेदारी बढ़ेगी। नौकरी में कार्यभार बढ़ेगा। मन परेशान हो सकता है। स्वभाव में	नौकरी में अफसरों का सहयोग मिलेगा, स्थान परिवर्तन भी हो सकता है। वाणी में कठोरता का भाव रहेगा, बातचीत में संयत रहें। वस्त्रों	इस सप्ताह परिवार के साथ धार्मिक यात्रा के योग बन रहे हैं। माता का सहयोग भी प्राप्त होगा। आत्मविश्वास बहुत रहेगा। ज्यादा उत्साही होने से बचें।
नौकरी में तरक्की होने की संभावना है। आत्मविश्वास बढ़ेगा। धर्म के प्रति श्रद्धाभाव बना रहेगा। मानसिक शांति रहेगी। गुस्सा पर काबू रखें।	परिवार में हंसी-खुशी का माहौल रहेगा। स्वास्थ्य का ध्यान रखना होगा। आत्मविश्वास बहुत रहेगा। नकारात्मक विचारों से बचाव	मन खुश रहेगा। आत्मविश्वास में कमी रहेगी। मानसिक शांति रहेगी लेकिन असंतोष भी रहेगा। परिवार में शांति बनी रहेगी। पिता का सहयोग मिलेगा।	पारिवारिक जिम्मेदारी बढ़ सकती हैं। मान-सम्मान बढ़ेगा। नौकरी में पदोन्नति के योग हैं। आत्मविश्वास बन रहेगा। शिक्षा से जुड़े काम सफल होंगे।

उदय सहारन और सचिन दास की जोड़ी ने बना डाला वर्ल्ड रिकॉर्ड, बड़े अंतर से पुरानी जोड़ीयों का पीछे छोड़ा

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

नई दिल्ली। भारतीय अंडर-19 क्रिकेट टीम ने मंगलवार को बेहतरीन प्रदर्शन करते हुए आईसीसी अंडर-19 वर्ल्ड कप 2024 के सेमीफाइनल में दक्षिण अफ्रीका को 2 विकेट से मात दी। भारतीय टीम ने लगातार पांचवीं बार अंडर-19 वर्ल्ड कप फाइनल में प्रवेश किया।भारतीय अंडर-19 टीम के कप्तान उदय सहारन और सचिन दास की जोड़ी ने मंगलवार को अंडर-19 वर्ल्ड कप 2024 के सेमीफाइनल में दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ वर्ल्ड रिकॉर्ड बनाया। दोनों बल्लेबाजों ने पांचवें विकेट के लिए 171 रन की साझेदारी की। भारत ने दक्षिण अफ्रीका को 2 विकेट से मात देकर लगातार पांचवीं बार अंडर-19 वर्ल्ड कप फाइनल में प्रवेश किया।भारतीय टीम की जीत के हीरो कप्तान उदय सहारन और सचिन दास रहे, जिन्होंने पांचवें के लिए 171 रन की साझेदारी की और वर्ल्ड रिकॉर्ड अपने नाम किया। सहारन-दास की जोड़ी युवा क्रिकेट में पांचवें विकेट के लिए सबसे बड़ी साझेदारी का वर्ल्ड रिकॉर्ड अपने नाम कर चुकी है।उदय सहारन और सचिन दास की जोड़ी ने पांचवें विकेट की मजबूत साझेदारी करके बांग्लादेश की जोड़ी के वर्?ड रिकॉर्ड तो ध्वस्त किया। बांग्लादेश के तौहिद हृदय और शमीम हुसैन ने इससे पहले पांचवें विकेट के लिए 161 रन की साझेदारी की थी।वहीं, भारत की तरफ से पांचवें विकेट के लिए सबसे बड़ी साझेदारी का रिकॉर्ड सरफराज खान और रिकी भुई के नाम दर्ज था। खान और भुई ने पांचवें विकेट के लिए 159 रन जोड़े थे। अब उदय और सचिन ने इन दोनों जोड़ीयों को पीछे करते हुए इतिहास के पन्नों में अपना नाम दर्ज करा लिया है।उदय सहारन (81) और सचिन दास (96) की शानदार पारियों की बदौलत भारतीय टीम ने मंगलवार को आईसीसी अंडर-19 वर्?ड कप 2024 के सेमीफाइनल में दक्षिण अफ्रीका को 13 गेंदें शेष रहते दो विकेट से मैच जीता।भारत ने बेनोनी में खेले गए सेमपहले गेंदबाजी का फैसला किया। दक्षिण अफ्रीका ने पहले बल?लेबाजी की और निर्धारित 50 ओवर में सात विकेट खोकर 228 रन बनाए। जवाब में भारत ने 48.5 ओवर में 8 विकेट खोकर लक्ष्य हासिल किया। भारत की अंडर-19 वर्?ड कप के फाइनल में पाक या ऑस्ट्रेलिया के मैच विजेता से भिड़ंत होगी।

सम्पादकीय

नया सचिन है, इंतजार करिए चमकते भविष्य का

गत विजेता भारत ने मंगलवार (छह फरवरी) को सेमीफाइनल मैच में दक्षिण अफ्रीका को दो विकेट से हरा दिया। इस जीत के साथ ही उसने लगातार दूसरी बार फाइनल में अपनी जगह बनाई है।हो सकता है कि आपने अंडर 19 विश्वकप के ज्यादातर मैच नहीं देखे हों। मैंने भी नहीं देखे थे। हां अमर उजाला में पढ़कर यह जरूर पता चलता रहा कि भारत अपने मैच लगातार जीत रहा है। क्रिकेटर सरफराज के छोटे भाई मुशीर खान के कारण भी सोशल मीडिया पर थोड़ी चर्चा मिल रही थी। इसीलिए सोचा कि दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ सेमीफाइनल मैच जरूर देखा जाए। इत्तेफाक देखिए कि टीवी के सॉफ्टवेयर में कुछ कमी आने के कारण दक्षिण अफ्रीका की पहले खेली गई पारी नहीं देख पाया। इसके बाद तय किया कि मोबाइल पर टीवी चलाकर या ऑनलाइन स्कोरिंग वेबसाइटों के सहारे मैच को देखा जाएगा। भारत की पारी शुरू होने वाली थी और देखा कि दक्षिण अफ्रीका ने 245 का लक्ष्य दिया है। उसी वेबसाइट पर यह भी कर दिया लेकिन फिर देखा तो 134 बन गए थे और विकेट केवल चार ही थे। इसके बाद मैच टीवी पर देखना शुरू किया। अंदाजा हुआ कि ये खिलाड़ी उम्र में बेशक अभी कम है लेकिन हौसला बड़ा है। उदय सहारन की टिकाऊ कप्तानी पारी देखकर आप हैरान रह जाएंगे, वहीं एक और युवा सचिन धास जैसे दक्षिण अफ्रीका के गेंदबाजों को बख्शना नहीं चाहता था। शतक पूरा नहीं हुआ लेकिन भारत को सुरक्षित जीत की ओर ले जाकर इस खिलाड़ी ने जता दिया कि वह भी अपने हमनाम खिलाड़ी सचिन तेंदुलकर की तरह एक दिन बड़े मैच जिताऊ खिलाड़ी साबित हो सकते हैं। महाराष्ट्र के इस खिलाड़ी के बारे में जानकारी करेंगे तो खास बात यह भी पता चलेगी कि उनके पिता ने सचिन तेंदुलकर के नाम पर ही उनका नाम सचिन रखा। 95 गेंद पर 96 रन की पारी खेली सचिन ने। कप्तान सहारन ने तो जैसे तय ही कर रखा था कि वह फाइनल में पहुंचा कर ही दम लेंगे। अंतिम क्षणों तक लगा कि मैच हाथ से जा सकता है लेकिन उदय

देखा कि इस मैदान में इससे पहले इतना स्कोर केवल एक ही बार पार किया जा सका है। खैर लगा कि भारत की टीम तो मजबूत है तो स्कोर छोटा ही रहेगा। पर यह क्या हुआ, पहली गेंद ही पर ही भारत का पहला विकेट गिर गया। फिर मुशीर खान मैच जिता देंगे लेकिन एक अच्छा चौका मारने के बाद मुशीर भी चले गए। इसके बाद बीच-बीच में मैच देखता रहा। जब 32 पर चौथा विकेट गिरा तो मानो दिल ही टूट गया। वेबसाइट को बंद कर दिया, थोड़ी देर बाद देखा तो स्कोर 90 पर चार विकेट ही था। दुआ करते हुए फिर बंद सहारन ने 123 गेंद पर 81 रन बनाए।टीवी पर इस मैच की हिंदी की कमेंटरी उन्मुक्त चंद कर रहे थे। वह युवा खिलाड़ी जिनकी कप्तानी में भारत यह खिताब जीत चुका है। यह बात और है कि वक्त के साथ मिली शोहरत के साथ उन्मुक्त उतना बेहतर प्रदर्शन नहीं कर पाए और अभी अमेरिका में लीग खेल रहे हैं। दुआ करिए कि इस बार खेल रही युवा पीढ़ी हमें यह खिताब तो दिलाए ही और आगे भी विश्व चैंपियन बनाए। और हां फाइनल जरूर देखिएगा और इन खिलाड़ियों के संघर्ष की कहानियां भी जानिएं।

सही दिशा में छोटा कदम पूरे देश के लिए साबित हो सकता है नजीर

उत्तराखंड में बन रहा नया कानून संविधान के नजरिये से पूरे देश के लिए नजीर साबित हो सकता है, जिससे प्रेरणा लेकर 'एक देश एक कानून' के तहत यूसीसी को पूरे देश में जल्द लागू करने की जरूरत है। इससे संविधान निर्माताओं द्वारा देखा गया लैंगिक समानता का स्वप्न सही मायने में साकार हो सकेगा।संविधान के प्रावधानों को साकार करते हुए उत्तराखंड के मुख्यमंत्री पुष्कर धामी ने समान नागरिक संहिता (यूसीसी) पर कानून बनाने की ऐतिहासिक पहल की है। संविधान की शुरुआत 'सत्यमेव जयते' से होती है, जहां सारनाथ का सिंह कानून के शासन के महत्व को दर्शाता है। गणतंत्र के 75 साल बाद भी यूसीसी पर चल रहे असमंजस को संविधान में उकेरे गए पौराणिक आख्यानों से समझा जा सकता है। संविधान सभा में के. एम. मुंशी जैसे सदस्यों की बात मानकर अगर यूसीसी को मूल अधिकार वाले अध्याय में शामिल किया जाता, तो यह कानून सभी के लिए बाध्यकारी हो जाता। मूल

अधिकार वाले अध्याय-3 में रावण को पराजित करने के बाद लौट रहे राम-लक्ष्मण और सीता के साथ अधर्म पर धर्म की जीत का चित्र है। लेकिन नजीरुद्दीन अहमद जैसे सदस्यों के विरोध की वजह से इसे मार्गदर्शक सिद्धांत वाले अध्याय-4 में डाला गया। जहां कुरुक्षेत्र में श्रीकृष्ण गीता के उपदेश से अर्जुन के मोह को हरने की कोशिश करके कर्म के लिए प्रेरित कर रहे हैं।संविधान में स्त्री और पुरुष, दोनों को बराबरी से चुनावों में वोट डालने का अधिकार है। सभी धर्मों के स्त्री और पुरुषों के लिए आपराधिक कानून भी समान हैं। लेकिन शादी, तलाक, बच्चे और संपत्ति से जुड़े सिविल मामलों में धर्म के आधार पर महिलाओं के साथ भेदभाव होना दुर्भाग्यपूर्ण है। डॉ. राजेंद्र प्रसाद की बातों पर अमल करते हुए वर्ष 1956 में हिंदू कोड बिल के साथ मुस्लिम समुदाय के लिए भी कानून बनना चाहिए था। वर्ष 1985 में शाहबानो मामले के बाद भी इस बारे में ठोस कदम उठाया जा सकता था। उसके बजाय तुष्टीकरण नीति के तहत सुप्रीम कोर्ट के फैसले को पलटने से कट्टरपंथी ताकतों को बढ़ावा ही मिला।इंडोनेशिया, बहरीन, तुर्किये और लेबनान जैसे कई मुस्लिम देशों में आधुनिक कानून लागू हैं, तो फिर भारत में ओवैसी जैसे कट्टरपंथी नेताओं द्वारा धर्म के आधार पर यूसीसी के विरोध को प्रधानता क्यों मिलनी चाहिए? पर्सनल लॉ के नाम पर रजस्वला होने के बाद नाबालिग मुस्लिम लड़कियों की शादी का समर्थन करने वालों को शरीयत ऐक्ट की धारा 3-बी पढ़ने की जरूरत है। कॉन्ट्रैक्ट ऐक्ट की धारा-11 के तहत ऐसे अनुबंध में दोनों पक्षों का सक्षम यानी बालिग होना जरूरी है। इसलिए शरीयत ऐक्ट की आड़ में नाबालिग मुस्लिम बच्चों की शादी गलत है।सियासी बवाल और धार्मिक विरोधाभास के साथ कई कानूनी चुनौतियां भी हैं। पहला, लिव-इन के दौर में बहु-विवाह पर प्रभावी रोक कैसे लगेगी? प्रस्तावित कानून में लिव-इन में रहने की स्वघोषणा के साथ अभिभावकों को सूचना देने का प्रावधान है। सुप्रीम कोर्ट के फैसले और कानून के बावजूद सभी शादियों के रजिस्ट्रेशन के नियमों का पालन नहीं हो रहा, तो फिर लिव-इन के दौर में शादी और तलाक के मामलों का निर्धारण कैसे होगा?दूसरा, देश के कानून के अनुसार, शादी के लिए न्यूनतम उम्र लड़कियों के लिए 18 साल और लड़कों के लिए 21 साल है। लड़कियों की शादी की उम्र 18 से 21 साल करने पर संसद में कई साल से सिर्फ मंथन हो रहा है। उत्तराखंड में पूर्व जज की कमेटी ने भी माना है कि बाल-विवाह के पीछे अशिक्षा और गरीबी बड़ी वजह है। हाईकोर्ट और सुप्रीम कोर्ट के अनुसार, नाबालिग बच्चों के सहमति से बने संबंधों को अपराध के दायरे से बाहर रखा जाना चाहिए। इसलिए लड़कियों की उम्र को बढ़ाने के बजाय लड़कों की शादी की न्यूनतम उम्र को भी 18 साल करने पर विचार होना चाहिए। इससे लैंगिक समानता के साथ कानून-पालन का भाव बढ़ेगा।तीसरा, कुछ लोग यूसीसी को जनसंख्या विस्फोट से निपटने का कारगर उपाय मानते हैं। भारत में कई दशकों से जनसंख्या नियंत्रण पर सिर्फ कानून बनाने की बात हो रही है, जबकि जमीनी हकीकत यह है कि अगले 10 वर्षों में कामकाजी आबादी कम होने के साथ बूढ़ों की तादाद भी बढ़ जाएगी। यूसीसी के तहत लिव-इन से पैदा होने वाले नाजायज बच्चों को भी कानूनी अधिकार मिलेंगे। सरोगेसी के तहत भी लोग बच्चे पैदा करते हैं। इन नई चुनौतियों के बीच दो बच्चों की नीति पर प्रभावी अमल कैसे होगा? उत्तराखंड के अलावा, मध्य प्रदेश और गुजरात में भी ऐसी पहल हो रही है। समवर्ती सूची में यूसीसी से जुड़े अनेक मामलों पर संसद ने कानून बनाए हैं। कई विषयों पर कानून बनने की जोरों से बात हो रही है। इसलिए उत्तराखंड विधानसभा में पारित होने के बाद राज्यपाल इसे केंद्रीय गृह मंत्रालय और राष्ट्रपति की मंजूरी के लिए भेज सकते हैं। सियासत के नजरिये से राज्यों में कानून बनाना लाभकारी हो सकता है, लेकिन कई राज्यों में मनमाने तरीके से कानून निर्माण से गलत मिसाल के साथ सांविधानिक अराजकता भी बढ़ सकती है।आईपीसी, सीआरपीसी और एविडेंस ऐक्ट के औपनिवेशिक कानूनों के बजाय पूरे देश के लिए नए आपराधिक कानून बनाए गए हैं। नकल रोकने के लिए भी संसद से राष्ट्रीय स्तर पर कानून बन रहा है। तीन तलाक पर भी केंद्र सरकार ने प्रभावी कानून बनाया है। इसलिए संविधान के अनुच्छेद 12 के तहत दी गई राज्य की परिभाषा और विधि आयोग की सिफारिशों के अनुसार, संसद से पूरे देश के लिए यूसीसी कानून बनना चाहिए यूसीसी का मुद्दा 1989 से भाजपा के घोषणा-पत्र का हिस्सा रहा है। जिस तरीके से अनुच्छेद 370 के प्रावधानों को संसद के कानून से निरस्त किया गया, उसी ठोस तरीके से यूसीसी पर राज्यों के बजाय केंद्रीय स्तर पर अमल की जरूरत है। विधि आयोग की रिपोर्ट में यूसीसी के लागू होने पर अनेक व्यावहारिक अड़चनों का विवरण है।उत्तराखंड में सुप्रीम कोर्ट के पूर्व जज की समिति ने बड़े स्तर पर सभी पक्षों के साथ विमर्श किया है। उन पहलुओं पर पूरे देश में स्वस्थ बहस करने के बाद राष्ट्रीय सहमति बनाने की जरूरत है। उत्तराखंड में बन रहा नया कानून संविधान के नजरिये से पूरे देश के लिए नजीर साबित हो सकता है। महात्मा गांधी और डॉ. आंबेडकर ने स्त्री-पुरुष के सामान अधिकारों पर जोर दिया था। इसलिए उत्तराखंड से प्रेरणा लेकर 'एक देश एक कानून' के तहत यूसीसी को पूरे देश में जल्द लागू करने की जरूरत है। इससे संविधान निर्माताओं द्वारा देखा गया लैंगिक समानता का स्वप्न सही मायने में साकार हो सकेगा

प्रगतिशील समाज के लिए जरूरी पहल, इसमें निहित हैं व्यापक हित

समाज के व्यापक हितों के मद्देनजर समाज के पंथनिरपेक्ष हित चिंतकों को आगे बढ़कर समान नागरिक संहिता की दिशा में पहल करने की जरूरत है, ताकि हम एक प्रगतिशील समाज बन सकें।उत्तराखंड सरकार ने विधानसभा में समान नागरिक संहिता विधेयक पेश किया है। जानकारी के अनुसार, इसमें सभी नागरिकों के कल्याण के लिए एक जैसे कानून का प्रस्ताव है। हलाला तथा तीन तलाक जैसी अमानवीय प्रथाओं को प्रतिबंधित कर दिया गया है। सभी धर्मों की तलाकशुदा महिलाओं के लिए समान रूप से भरण-पोषण की व्यवस्था की गई है। सभी लड़कियों के विवाह की न्यूनतम उम्र 18 वर्ष कर दी गई है। लिव-इन संबंधों के कारण अक्सर विवाद और हिंसा की खबरें आती रहती हैं। इससे निपटने के लिए उनका पंजीकरण अनिवार्य कर दिया गया है। बहुपतनी प्रथा को समाप्त करके सभी के लिए केवल एक विवाह का नियम प्रस्तावित है।संविधान के अनुच्छेद 44 में समान नागरिक संहिता की स्पष्ट व्यवस्था के बावजूद सरकारें इस दिशा में आगे कदम बढ़ाने से हिचकती रहीं। संविधान का अनुच्छेद 44 सबसे अधिक दुष्प्रचारित हिस्सों में से एक है। इस उपबंध के साथ बहुत अन्याय हुआ है। इसमें देश के सभी नागरिकों के लिए एक जैसा कानून बनाने की बात कही गई है। इसमें सरकार से अपेक्षा की गई है कि वह लिंग, क्षेत्र, भाषा की परवाह किए बगैर सभी के लिए एक जैसा कानून बनाए, जो मानवीय गरिमा का सम्मान करे, उसे सुरक्षा बोध दे और सभ्य समाज के मानकों पर खरा भी उतरे।दुर्भाग्यवश अनुच्छेद 44 की इस पवित्र मंशा को आगे बढ़ाने, उस पर तार्किक बहस करने के बजाय उसे सांप्रदायिक रूप देकर अछूत बना दिया गया। सुप्रीम कोर्ट का आग्रह बेकार गया। यह दस्तूर आज भी कायम है।संविधान निर्माताओं ने महसूस किया कि विवाह और भरण-पोषण से जुड़े मामलों का संबंध किसी पूजा-पद्धति से नहीं है, बल्कि इसका संबंध इंसानियत से है। निःसंतान व्यक्ति यदि किसी बच्चे को गोद लेकर अपनी वंश-परंपरा को आगे बढ़ाना चाहता है या उससे उसको सुरक्षा बोध का एहसास होता है, तो उससे किसी पूजा-पद्धति की अवमानना कैसे हो सकती है? यदि किसी कानून से किसी महिला को सामाजिक सुरक्षा मिलती है या पति से अलग होने या पति के नाराज होने के बाद उसे दर-बदर भटकने के बजाय गुजारे-भत्ते की व्यवस्था की जाती है, तो इसमें उसका धर्म कहां से आड़े आता है? महिला-पुरुष के वैवाहिक संबंधों में यदि समानता सुनिश्चित की जाती है, तो इससे किसी भी सभ्य समाज को शर्मिंदगी नहीं, अपितु गर्व होना चाहिए।आजादी के बाद हिंदू विधि में व्यापक परिवर्तन किए गए। हिंदू विवाह अधिनियम द्वारा बहुविवाह पर प्रतिबंध लगाया गया। पति-पत्नी को विवाह-विच्छेद करके सम्मानपूर्वक एक-दूसरे से अलग रहने का अधिकार दिया गया। महिलाओं को भरण-पोषण का अधिकार दिया गया। पिता की संपत्ति में बेटियों को भी अधिकार देने की परंपरा शुरू हुई। संतान को गोद लेने के मामलों में भी पति के एकाधिकार को तोड़ते हुए महिलाओं की भागीदारी सुनिश्चित करने की कोशिश की गई। हिंदू कानून में किए गए सुधारों में मानवाधिकारों और समानता के सिद्धांतों की तरजीह दी गई। पर वोट बैंक खिसकने की स्वार्थी सोच के कारण दूसरी जगहों पर ऐसा नहीं हो सका और उन्हें बेहतरी के मौके से लगातार वंचित रखा गया।आधुनिक सोच का लाभ दूसरे मतावलंबियों को भी हासिल हो, इसके लिए अदालतें लगातार कोशिश करती रही हैं। मोहम्मद अहमद खान बनाम शाहबानो मामले (1985) में सुप्रीम कोर्ट ने चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि यह खेद का विषय है कि अनुच्छेद 44 में तय राज्य की जिम्मेदारी अब निर्जीव शब्द समूहों का संग्रह बनकर रह गई है। अदालत ने कहा कि मुस्लिम समाज को इस मामले में पहल करने की जरूरत है, ताकि प्रगति की दौड़ में वे दूसरों से पीछे न रहें। हैरानी की बात यह है कि शाहबानो के जिस मुकदमे में सुप्रीम कोर्ट ने लोगों से आगे बढ़ने की पहल का आह्वान किया, उसके दुष्प्रचार ने समान नागरिक कानून की पहल को सबसे मर्मांतक चोट पहुंचाई। उसके बाद सरला मुद्गल तथा लिली थॉमस जैसे कई प्रकरणों में सवीच्च न्यायालय ने समान नागरिक कानून के नहीं होने के दोषों को उजागर करते हुए इसका तुरंत क्रियान्वयन करने का निर्देश दिया।वैवाहिक मामलों में वैयक्तिक विधि के दुरुपयोग से विचलित होकर अदालत ने कहा कि अब तो इसका दुरुपयोग कानून को धोखा देने के लिए होने लगा है। जब वैवाहिक साथी से छुटकारा पाना हो, तो कुछ समय के लिए अपना धर्म बदलकर दूसरी शादी कर ली, क्योंकि दूसरे धर्म से जुड़े कानून में उसे मान्यता दी गई है। उसके बाद अपनी मर्जी से तलाक देकर उस महिला से छुटकारा पा लिया, क्योंकि उस धर्म का कानून इसकी इजाजत देता है। सुप्रीम कोर्ट और कई विद्वानों ने इसी कमी की ओर बार-बार इशारा किया, पर हमारे राजनीतिक नेतृत्व के ऊपर इसका कोई असर नहीं पड़ा। प्रो ताहिर महमूद ने अपनी पुस्तक मुस्लिम पर्सनल लॉ (1977) में तथा न्यायमूर्ति एमएच बेग ने इम्पैक्ट ऑफ सेक्यूलरिज्म (1973) में भी संविधान के अनुच्छेद 44 को अमली जामा पहनाने का आह्वान किया, किंतु शाहबानो प्रकरण के दुःस्वप्न से अब भी कोई उबरने को तैयार नहीं है।समाज के व्यापक हितों के मद्देनजर समाज के पंथनिरपेक्ष हित चिंतकों को आगे बढ़कर इस दिशा में पहल करने की जरूरत है, ताकि हम एक प्रगतिशील समाज के रूप में एकजुट हो सकें।

मजबूती की राह पर अर्थव्यवस्था, यही गति बरकरार रहने की संभावना

भारत में जीडीपी की गणना दो प्रकार से की जाती है। वास्तविक या रियल और नॉमिनल। वास्तविक जीडीपी की गणना का आधार वर्ष 2011-12 है और इस अवधि के दौरान वस्तुओं एवं सेवाओं की तात्कालिक कीमत के अनुसार वस्तु या सेवा का मूल्य आंका जाता है, जबकि नॉमिनल जीडीपी के तहत वर्तमान मूल्य पर वस्तु एवं सेवा का मूल्य आंका जाता है। आधार वर्ष

की कीमत स्थिर होती है, क्योंकि वह बीते हुए कल की कीमत होती है, जबकि वर्तमान समय की कीमत में परिवर्तन संभव है।भारत का जीडीपी वर्तमान मूल्य पर 2024 में 41 खरब डॉलर, 2025 में 45.1 खरब डॉलर, 2026 में 49.5 खरब डॉलर और 2027 में 54.2 खरब डॉलर रहने का अनुमान है। भारत में मुद्रास्फीति और बेरोजगारी दर काबू में है। साथ ही, प्रति व्यक्ति आय में निरंतर वृद्धि हो रही है। इस आधार पर माना जा सकता है कि भारतीय अर्थव्यवस्था में आगामी वर्षों में भी मजबूती बनी रहेगी। हां, जीडीपी के अनुपात में सरकारी कर्ज का प्रतिशत अधिक है, लेकिन वस्तु एवं सेवा कर (जीएसटी) और अन्य कर व गैर कर राजस्व संग्रह में आ रही तेजी से इसमें आने वाले वर्षों में कुछ कमी आ सकती है।भारत की जीडीपी में योगदान देने वाले मुख्य क्षेत्र कृषि, उद्योग और सेवाएं हैं। लिहाजा, जीडीपी बढ़ाने के लिए सरकार को खेती-किसानी पर से लोगों की निर्भरता को कम करना, कृषि में नवाचार के इस्तेमाल को बढ़ाना, विपणन व्यवस्था को मजबूत करना, सोने में निवेश करने की आदत में बदलाव करना, अनुसंधान एवं विकास पर जोर, युवाओं को कौशलयुक्त बनाना, शिक्षा पर अधिक राशि खर्च करना, मुफ्त की रेवड़ी बांटने से परहेज करना, कमजोर तबके को आत्मनिर्भर बनाना और आधारभूत संरचना को मजबूत करना होगा।

द ग्रेट रशियन रॉबरी, जिसने बदल दिया दुनिया के अनाज कारोबार का रिवाज

1803 से लेकर 1972 तक गेहूं की कीमतों में इतिहास में कहीं किसी भी बड़ी तेजी का जिक्र नहीं है। बीसवीं सदी के सातवें दशक की शुरुआत तक महंगाई में गेहूं का योगदान नगण्य था, पर 1970 के दशक में अचानक पूरी दुनिया में अफरा-तफरी मच गई।आइए टाइम मशीन तैयार है...पकड़िए अपनी सीट।मनी हेइस्ट यानी बैंक लूट तो सुनी होगी, आइए गेहूं की एक अनोखी लूट से मिलते हैं, जो रूस ने की थी। उसके बाद गेहूं का बाजार ही बदल गया।हम 1970 के दशक में है।दूसरे विश्व युद्ध को तीस साल बीत चुके थे। अमेरिका अब दुनिया में कृषि उत्पादन की बड़ी ताकत बन गया था। गरीबों को फूड स्टांप कार्यक्रमों के जरिये सस्ता अनाज दिया जा रहा है। दूसरी बड़ी लड़ाई में अपना दबदबा स्थापित करने के बाद अमेरिका उदारता और मदद के सहारे कूटनीतिक प्रभाव बना रहा था। 1954 में फूड फॉर पीस कार्यक्रम आया, जिसके तहत जरूरतमंद देशों को खाद्य सहायता दी जा रही थी।यह वही अमेरिका था, जो दूसरे विश्वयुद्ध की शुरुआत तक कुपोषण और अनाज की कमी से जूझ रहा था। लिजी कॉलिंघम अपनी मूल्यवान किताब 'द टेस्ट ऑफ वार - वर्ल्ड वार टू एंड बैटल फॉर फूड' में लिखती हैं कि दूसरी बड़ी जंग के दौरान अमेरिका में सेना के लिए सेहतमंद लोग मिलना मुश्किल थे। प्रत्येक पांच में दो

पुरुष फौज में भर्ती से नकार दिए जाते थे, क्योंकि वे कुपोषित थे।1930 की महामंदी के बाद हुए कृषि सुधारों ने अमेरिका की खेती को संकट से समृद्धि में बदल दिया था। किसानों को मूल्य समर्थन और सब्सिडी दी गई थी, जिसका फायदा भरपूर फसलों के तौर पर पककर सामने आने लगा था। दूसरे विश्व युद्ध के बाद नई तकनीकों से खेती के उत्पादन में और तेजी आई और अनाज के कोठार भरने लगे।यूं तो यह दौर चरम शीत युद्ध था, मगर अमेरिका और रूस के बीच कारोबारी रिश्तों की गर्मी देखते ही बनती थी।1971 में अमेरिका रूस को गेहूं का निर्यात करता था। यह सौदे बहुराष्ट्रीय अनाज कंपनियों के जरिये किए जाते थे। 70 के दशक की शुरुआत में डॉलर कमजोर हो रहा था। गोल्ड स्टैंडर्ड समाप्त हो गया था। अमेरिकी राष्ट्रपति निक्सन बुरी तरह परेशान थे। अमेरिका का निर्यात यूरोप और जापान से मात खा रहा था। अमेरिका की सरकार विदेश व्यापार का चेहरा ठीक करने के लिए गेहूं का निर्यात बढ़ाना चाहती थी। भारी उत्पादन के कारण भंडार भरे थे, जिन्हें खाली करना जरूरी था। इधर सोवियत संघ में 1971-72 में गेहूं की फसल बुरी तरह मारी गई। अमेरिका को पता था, सोवियत रूस को अनाज चाहिए। अर्ल बट्ज अमेरिकी राष्ट्रपति निक्सन की सरकार में कृषि मंत्री थे। तेज-तर्रार, मुंहफट और विवादित बट्ज को अमेरिका में खेती की नीतियां बदलने के लिए जाना जाता है। उस वक्त तक अमेरिका में भारत जैसी समर्थन मूल्य प्रणाली लागू थी। किसानों का अतिरिक्त उत्पादन सरकार खरीदती थी। यह नीति महामंदी के दौर में आई थी। बट्ज ने कृषि उपज के निर्यात का बड़ा कार्यक्रम बनाया।

संक्षिप्त समाचार

इस वजह से चुनाव आयुक्त अरुण गोयल ने दिया था इस्तीफा

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
नई दिल्ली। मुख्य चुनाव आयुक्त राजीव कुमार ने शनिवार को कहा कि चुनाव आयुक्त अरुण गोयल ने व्यक्तिगत कारणों से इस्तीफा दिया है। हालांकि अरुण गोयल के इस्तीफे के कारण पर सीधा जवाब देने से वह बचते दिखे। मुख्य चुनाव आयुक्त राजीव कुमार ने शनिवार को कहा कि चुनाव आयुक्त अरुण गोयल ने व्यक्तिगत कारणों से इस्तीफा दिया है। हालांकि अरुण गोयल के इस्तीफे के कारण पर सीधा जवाब देने से वह बचते दिखे। लोकसभा चुनाव कार्यक्रम की घोषणा करने के लिए आयोजित संवाददाता सम्मेलन में राजीव कुमार ने यह भी कहा कि चुनाव आयोग में असहमति को प्रोत्साहित किया जाता है। लोकसभा चुनाव कार्यक्रम की घोषणा करने के लिए आयोजित संवाददाता सम्मेलन में राजीव कुमार ने यह भी कहा कि चुनाव आयोग में असहमति को प्रोत्साहित किया जाता है। गोयल ने पिछले शनिवार को इस्तीफा दे दिया था। गोयल के इस्तीफे के बारे में पूछे जाने पर राजीव कुमार ने कहा, अरुण हमारी टीम के प्रतिष्ठित सदस्य थे। मुझे उनके साथ काम करने में बहुत अच्छा लगा, लेकिन व्यक्ति की निजता को सम्मान देना चाहिए। अगर उन्होंने व्यक्तिगत कारणों से पद छोड़ा है तो हमें इस फैसले का सम्मान करना चाहिए। ऐसी अटकलें हैं कि गोयल ने राजीव कुमार के साथ मतभेदों के कारण पद छोड़ा है।

सीएए का उद्देश्य प्रताडितों को राहत देना

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
हैदराबाद। उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ ने शनिवार को कहा कि सीएए का उद्देश्य किसी भी मौजूदा नागरिक के अधिकारों का उल्लंघन किए बिना पड़ोसी देशों में सताए

गए धार्मिक अल्पसंख्यकों को राहत प्रदान करना है उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ ने शनिवार को कहा कि सीएए का उद्देश्य किसी भी मौजूदा नागरिक के अधिकारों का उल्लंघन किए बिना पड़ोसी देशों में सताए गए धार्मिक अल्पसंख्यकों को राहत प्रदान करना है। धनखड़ ने कहा कि सीएए के संबंध में यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि कुछ लोग ऐतिहासिक संदर्भ और पड़ोस में सताए गए अल्पसंख्यकों पर सीएए के कारण पड़ने वाले सुखद प्रभाव को पहचानने में विफल रहे। कान्हा शांति वनम में 'वैश्विक आध्यात्मिक महोत्सव' को संबोधित करते हुए धनखड़ ने कहा कि सीएए के संबंध में, यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि कुछ लोग ऐतिहासिक संदर्भ और पड़ोस में सताए गए अल्पसंख्यकों पर सीएए के कारण पड़ने वाले सुखद प्रभाव को पहचानने में विफल रहे।

नागरिक सुरक्षा के वार्डन आपदा से निपटने में सक्षम मनोज वर्मा

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
प्रयागराज। नागरिक सुरक्षा कोर लखनऊ के वार्डेनो को प्रशिक्षण के उपरांत प्रमाणपत्र प्रदान किया गया। सीनियर असिस्टेंट डिप्टी कंट्रोलर मनोज वर्मा के कर कमलों से प्रमाणपत्र वितरित किए गए। लखनऊ सिविल डिफेंस में गत दिनों कई वार्डेनो की नई भर्ती हुई थी। भर्ती के उपरांत वार्डेनो को बुनियादी प्रशिक्षण प्राप्त करना अनिवार्य होता है। जिसके उपरांत वो क्षेत्र में सक्रिय रूप से कार्य करना शुरू करते है। इसी के मद्देनजर नागरिक सुरक्षा नियंत्रण केंद्र पर सीनियर असिस्टेंट डिप्टी कंट्रोलर मनोज वर्मा के द्वारा प्रखंड चौक, महानगर और आलमबाग में नवनियुक्त वार्डेनो का आधारभूत

प्रशिक्षण चलाया गया। जिसमे वार्डेनो के कार्यों और उनके दायित्वों के साथ साथ सिविल डिफेंस के महत्व और उसके इतिहास से अवगत कराया गया। चौक प्रखंड के डिवीजनल वार्डन सुनील कुमार शुक्ला, प्रदीप शर्मा की उपस्थिति में सीनियर असिस्टेंट डिप्टी कंट्रोलर मनोज वर्मा के कर कमलों से चौक प्रखंड के वार्डन जावेद जैदी, अनुज कुमार साहू, मनोज कुमार, विधनेस सिंह, राखी बहेलिया, हामिद हुसैन, तुफैल अब्बास, हरिराम सिंह, मनोज तिवारी, रितेश सिंह, जगननथ लोधी, बाल कृष्ण, धीरज व्यास, पुनीत अग्रवाल, अनुज कुमार साहू, आलमबाग से रीता पटेल, अरविंद अस्थाना व महानगर से विजय सोनकर, विवेक कनौजिया, अमित कुमार, श्याम सुंदर, पवन गौड़, राकेश कुमार ने प्रमाणपत्र प्राप्त किए।

भाजपा और कांग्रेस का 'गारंटी' पर जोर

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
नई दिल्ली। आमचुनाव की तारीखों का एलान हो चुका है। ऐसे में पक्ष-विपक्ष और आक्रामकता के साथ अपना प्रचार अभियान चलाएंगे। एक तरफ भाजपा जहां अमृतकाल में सुशासन, तेजी से विकास और विकसित भारत के दृष्टिकोण के साथ चुनावी समर में जा रही है तो विपक्ष खासकर कांग्रेस मोदी सरकार के दो कार्यकालों को बेरोजगारी, महंगाई, संवैधानिक संस्थाओं पर कब्जे वाला बता रहा है और इसे अन्याय काल बता रहा है। आइए डालते हैं उन मुद्दों पर नजर जिन्हें विभिन्न राजनीतिक दलों की ओर से जोरशोर से उठाने के आसार हैं। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी आश्वस्त हैं कि उन्हें लगातार तीसरा कार्यकाल मिलेगा। उन्होंने मोदी की गारंटी को अपने अभियान का मुख्य विषय बनाया है। इसमें युवाओं के विकास महिलाओं के सशक्तीकरण किसानों के कल्याण और हाशिये पर पड़े कमजोर लोगों के लिए एक गारंटी है जिन्हें दशकों से नजरअंदाज किया गया है। यह सभी कल्याणकारी योजनाओं की संतृप्ति सुनिश्चित करने के सरकार के लक्ष्य के बारे में भी है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी आश्वस्त हैं कि उन्हें लगातार तीसरा कार्यकाल मिलेगा। उन्होंने 'मोदी की गारंटी' को अपने अभियान का मुख्य विषय बनाया है। इसमें युवाओं के विकास, महिलाओं के सशक्तीकरण, किसानों के कल्याण और हाशिये पर पड़े कमजोर लोगों के लिए एक गारंटी है जिन्हें दशकों से नजरअंदाज किया गया है।

कलश यात्रा के साथ पॉकेट 7 सेक्टर 82 में श्रीमद्भागवत कथा का शुभारंभ

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
नोएडा। नोएडा सेक्टर 82 स्थित शिव मंदिर परिसर में आयोजित श्रीमद्भागवत कथा के प्रथम दिवस शुक्रवार को ढोल नगाड़ों के साथ भव्य कलश यात्रा निकाली गयी। कलश यात्रा सेक्टर पॉकेट 7 में घूमती हुई पुनः शिव मंदिर परिसर स्थित कथा स्थल पर पहुंची। कलश यात्रा के दौरान सेक्टर की महिलाओं ने कलश अपने सर पर धारण कर भक्ति गीतों के साथ वातावरण को भक्तिमय कर दिया। कलश यात्रा के उपरांत मंत्रोच्चार के बीच पुराण पूजन एवं व्यास जी का तिलक कर पूजन किया गया। कथा के प्रथम दिवस कथा व्यास आचार्य विनोद कृष्ण महाराज ने भागवत माहात्म्य का वर्णन करते हुए कहा कि जब कोटि जन्मों का पुण्य उदय होता है

तब जाकर हमें श्रीमद्भागवत कथा सुनने को मिलती है। कथा के श्रवण मात्र से हमारे मेरु पर्वत के समान पापों का शमन हो जाता है। इसलिए जीवन में हमेशा नेक कार्य करते रहना चाहिए। परोपकार की भावना हमारे जीवन को श्रेष्ठता प्रदान कर भगवान के निकट ले जाने का कार्य करती है वहीं दुर्व्यसन हमें पतन की ओर ले जाते हैं। कथा व्यास आचार्य विनोद कृष्ण ने कथा सुनाते हुए कहा कि पावन नैमिषारण्य तीर्थ में सूत जी महाराज कथा सुना रहे हैं और सौनकादिक ऋषि श्रोता के रूप में कथा का श्रवण कर रहे हैं। सूत जी ने भागवत का महात्म्य बताते हुए कृष्ण भक्ति को श्रेष्ठ बताया। भक्ति, ग्यान, वैराग्य की विषद व्याख्या के अलावा गोकरण धुन्धकारी की कथा एवं शुकदेव जन्म आदि की कथा सुनाई। इस अवसर पर पंडित विनोद मिश्रा, राघवेंद्र दुबे, पंडित अजय पांडेय, पंडित अजय शुक्ला, अशोक तिवारी, सुशील पाल, विष्णु शर्मा, राजवीर सिंह, रमेश चंद्र दास, रवि राघव, गोरे लाल, संजय पांडेय, विजय कुमार, विकास कुमार शर्मा, उत्तम चंद्रा, रमेश चंद्र शर्मा, हरि शंकर सिंह, सर्वेश कुमार तिवारी सहित तमाम भगवत्प्रेमी भक्त मौजूद रहे।

नरेश कुमार शर्मा इंडियन फेडरेशन ऑफ वर्किंग जर्नलिस्ट्स के अध्यक्ष निर्वाचित

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
नोएडा। नोएडा इण्डियन फ़ेडरेशन ऑफ वर्किंग जर्नलिस्ट्स(छ्हें) के अध्यक्ष पद के चुनाव में नरेश कुमार शर्मा निर्वाचित घोषित किये गये। फ़ेडरेशन के केन्द्रीय चुनाव अधिकारी (ऐंड)शंकर दत्त शर्मा ने आज दिल्ली के 350- वर्धमान फ़ैशन माल, पीतमपुरा स्थित आई एफ़ डब्लू जे के कार्यालय में फ़ेडरेशन से जुड़े राज्य अध्यक्ष/महासचिव व प्रतिनिधियों की मौजूदगी में नरेश कुमार शर्मा के अध्यक्ष निर्वाचित होने की घोषणा की श्री नरेश कुमार शर्मा का नाम 11 राज्यों के करीब 160 से अधिक सदस्यों द्वारा प्रस्तावित और समर्थित किया गया। इस चुनावी प्रक्रिया में दिल्ली, राजस्थान, हरियाणा, छत्तीसगढ़, कर्नाटक, आंध्रप्रदेश, तेलंगाना, उत्तराखंड, झारखंड, गोआ, बिहार राज्य संगठनों के पदाधिकारियों व प्रतिनिधियों ने शिरकत की। बता दें कि श्री नरेश शर्मा पिछले डेढ़ दशक से पत्रकारिता से जुड़े हैं। कई राष्ट्रीय संस्थानों में अपने सेवाएं दे चुके श्री शर्मा फिलहाल दैनिक भास्कर (यूके-यूपी) में दिल्ली के लिए अपनी सेवाएं दे रहे हैं।

विघटनकारी प्रौद्योगिकियों पर दो दिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
नोएडा। नोएडा ग्रेटर नॉएडा स्थित जीएल बजाज कॉलेज में ठविघटनकारी प्रौद्योगिकियोंठ पर दो दिवसीय दूसरे अंतर्राष्ट्रीय

आईईईई सम्मेलन (आईसीडीटी-2024) का शुभारम्भ किया गया। इस सेमिनार का आयोजन कॉलेज के कंप्यूटर विज्ञान विभाग के द्वारा किया जा रहा हैं। भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान मंडी और एमएनआईटी इलाहाबाद के पूर्व प्रोफेसर बीडदीद चौधरी ने मुख्य अथिति और सूचना प्रौद्योगिकी केंद्र जेएमआई नई दिल्ली के मानद, अतिरिक्त निदेशक प्रोफेसर तनवीर अहमद एवं राजकीय इंजीनियरिंग कॉलेज बिजनौर के निदेशक प्रोफेसर नीलेंद्र बादल ने विशिष्ट अतिथि के रूप में भाग लेकर सम्मलेन को संबोधित किया। सम्मेलन के अध्यक्ष एवं कॉलेज निदेशक प्रो. (डॉद) मानस कुमार मिश्रा, सीएसई विभाग के अध्यक्ष प्रो. (डॉ.) संसार सिंह चौहान और सम्मानित अथितियों ने दीप प्रज्जवलन के साथ कार्यक्रम की शुरुआत की। दिन के पहले सत्र में एकेटीयू, लखनऊ में आर एंड डी विभाग में औदयोगिक परामर्श के एसोसिएट डीन डॉ. अनुज कुमार शर्मा और अलीगढ मुस्लिम विश्वविद्यालय में इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग विभाग के प्रोफेसर डॉ. रिजवान खान ने सम्बंधित विषय पर विशेष व्याख्यान दिया। डॉद मानस कुमार मिश्रा ने सभागार को संबोधित करते हुए कहा कि (आईसीडीटी-2024) एआई, ब्लॉकचेन, आईओटी, 3डी प्रिंटिंग और एमएल के साथ उनके सिद्धांत, कार्यप्रणाली और अनुप्रयोगों का उपयोग करके विघटनकारी प्रौद्योगिकी में ज्ञान और उपलब्धियों के आदान-प्रदान के लिए एक उत्कृष्ट अंतरराष्ट्रीय मंच प्रदान करेगा। इस दो दिवसीय अंतरराष्ट्रीय कॉन्फ्रेंस के पहले दिन अनुसंधान कार्यशाला व सम्मेलन में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, मशीन लर्निंग और डेटा एनालिटिक्स के बहु-विषयों के साथ-साथ सैद्धांतिक और व्यावहारिक जैसे पहलुओं पर चर्चा करते हुए प्रतिभागी अपने शोध पत्र प्रस्तुत करेंगे। सम्मेलन का लक्ष्य प्रौद्योगिकी क्षेत्र में अत्याधुनिक विकास पर चर्चा और तकनिकी का आदान-प्रदान करने के लिए शिक्षा और उद्योग के विद्वानों और अभ्यासकर्ताओं को एक साथ एक मंच पर लाना है। विघटनकारी प्रौद्योगिकियों के क्षेत्रों में महत्वपूर्ण प्रगति का वर्णन करने वाले शोध परिणामों, परियोजनाओं, सर्वेक्षण कार्यों और औद्योगिक अनुभवों को दर्शाने वाले लेखों को सम्मेलन में प्रस्तुत करने के लिए प्रतिभागियों को प्रोत्साहित किया जाएगा। तथा लेखक, अनुसंधान विद्वान और उद्योग विश्लेषक अपने मूल, अप्रकाशित उच्च गुणवत्ता वाले कार्य (शोध) को प्रस्तुत करके सम्मेलन में योगदान देंगे। अगले दो दिनों में विद्वान प्रतिभागी इंटरनेट ऑफ थिंग्स, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, मेक्ट्रोनिक्स, डेटा विज़ुअलाइज़ेशन के महत्वपूर्ण क्षेत्र पर चर्चा करते हुए प्रगति का अवलोकन करेंगे। जीएल बजाज शिक्षण संस्थान के वाइस चेयरमैन पंकज अग्रवाल ने सम्मलेन में आये हुए सभी प्रतिभागियों और आयोजन समिति को शुभकामनायें दीं।

धूम्रपान से होने वाले नुकसान के प्रति किया आगाह

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
नोएडा। धूम्रपान निषेध दिवसठ (नो स्मोकिंग डे) के उपलक्ष में बृहस्पतिवार को सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र बिसरख पर तम्बाकू नियंत्रण प्रकोष्ठ और शारदा विश्वविद्यालय के मनोचिकित्सक विभाग की ओर से निशुल्क शिविर का आयोजन किया गया। इस अवसर पर आशा कार्यकर्ताओं के लिए गोष्ठी का आयोजन किया गया और लोगों को धूम्रपान से होने वाले नुकसान के प्रति आगाह किया गया। गोष्ठी में जिला तम्बाकू नियंत्रण प्रकोष्ठ की प्रभारी डॉ. श्वेता खुराना ने कहा कि आशा कार्यकर्ता गृह भ्रमण करतीं है। वह इस दौरान घर-घर जाकर यह संदेश दें कि तम्बाकू का किसी भी रूप में सेवन हानिकारक है। उन्होंने बताया कि धूम्रपान न केवल सेवन करने वाले के लिए हानिकारक है बल्कि पास में बैठे व्यक्ति के लिए भी हानिकारक है। उन्होंने कहा महिलाओं को विशेषकर गर्भवती को धूम्रपान से बचना चाहिए, यह उनके और गर्भ में पल रहे शिशु के लिए घातक हो सकता है। शारदा विश्वविद्यालय के छात्रों ने केंद्र पर आए लाभाथिर्यो को

धूम्रपान के नुकसान बताने के लिए नुक्कड़ नाटक का आयोजन किया। नाटक के माध्यम से धूम्रपान सहित नशीले पदार्थों के सेवन से होने वाली हानियों से अवगत कराया गया। सभी छात्रों ने हस्ताक्षर अभियान में प्रतिभाग किया और उन्हें तम्बाकू नियंत्रण प्रकोष्ठ की ओर से सर्टिफिकेट दिए गए। कार्यक्रम में शारदा अस्पताल के मेडिकल सुपरिटेंडेंट आरएम शर्मा, डॉ. नज़रुल, डॉ. कुणाल, डॉ. परिका और प्रभारी चिकित्सा अधिकारी डॉ. सचिन्द्र मिश्र उपस्थिति रहे। गौरतलब है कि हर वर्ष 13 मार्च को धूम्रपान निषेध दिवस मनाया जाता है। इस वर्ष की थीम तम्बाकू नहीं, फल खाएं, सेहत सुरक्षित रखेंङ्ग थी।

नेकी की दीवार संस्था ने गरीबों को वस्त्र वितरण किया

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
नोएडा। इनर व्हील क्लब नोएडा सिटी की अध्यक्षा मंजु सूद व आई एस ओ दिपाली पुरी ने गांव

सर्फाबाद, सैक्टर-73, नौएडा के नवरतन सिलाई केंद्र के बाहर अपनी पूर्व स्थापित नेकी की दीवार से आज पुराने वस्त्रों का वितरण किया। कई महिलाएं बच्चे व पुरष अपनी आवश्यकतानुसार वस्त्र ले गए। प्रतिमाह अंडरप्रिविलेज्ड परिवार इस नेकी की दीवार का लाभ उठाते हैं। इसी सिलाई केंद्र से पुराने बैडकवर से कपड़े के थैले प्रति दस रूपए के हिसाब से बनवा कर, इनर वहील क्लब नौएडा सिटी उन्हें समाज में बांट देता है, प्लास्टिक बैग का इस्तेमाल रोकने के लिए। इस प्रकार नेकी की दीवार से एक पंथ तीन काज हो जाते हैं। ज़रूरतमंदों को कपड़े भी मिल जाते हैं, बैग सिलने वाली महिलाओं को कुछ आमदनी भी हो जाती है व प्लास्टिक बैग का प्रोत्सासन भी रोका जाता है। इसके अतिरिक्त, सिलाई केंद्र की संचालिका प्रमिला पांडे, नेकी की दीवार का रखरखाव देखती हैं, इनर व्हील क्लब नौएडा सिटी ने उन्हें अपनी सिलाई केंद्र के फर्श पर दरी लगाने के लिए दो हज़ार रुपए का अनुदान भी दिया।

सेक्टर 20 श्री हनुमान मंदिर पर श्रीमद्भागवत कथा ज्ञान यज्ञ का आयोजन 17 मार्च से

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
नोएडा। नोएडा सेक्टर-20 स्थित श्रीहनुमान मंदिर में श्रीमद्भागवत कथा ज्ञान यज्ञ आयोजन समिति ने प्रेसवार्ता का आयोजन कर श्रीमद्भागवत कथा के आयोजन की विष्णुकांत पराशर जी द्वारा श्रीमद्भागवत जी की कथा का गुणगान किया जायेगा। 17 मार्च को दोपहर बाद 02.00 बजे सेक्टर 20 स्थित श्री हनुमान मंदिर से भव्य कलश यात्रा निकाली जायेगी। 22 नोएडावासियों को श्रीमद्भागवत जी की ज्ञानवर्धक कथा का श्रवण कराया जायेगा। उन्होंने कहा कि श्रीराम मित्र मंडल कथा के आयोजन के माध्यम से भगवान श्रीकृष्ण के आदर्शों को जन जन तक पहुंचाने

विस्तृत जानकारी दी। कथा का आयोजन श्रीराम मित्र मंडल नोएडा द्वारा किया जा रहा है। प्रेसवार्ता को संबोधित करते हुए समिति के महासचिव मुनन कुमार शर्मा ने बताया कि 17 मार्च से 23 मार्च तक सेक्टर 20 स्थित श्री हनुमान मंदिर में श्रीमद्भागवत कथा ज्ञान यज्ञ का भव्य आयोजन किया जा रहा है। उन्होंने बताया कि 17 मार्च से प्रतिदिन सायं 04 बजे से 07.30 बजे तक कथा व्यास आचार्य मार्च को होली मंगल मिलन का आयोजन किया जाएगा। 23 मार्च को अंतिम दिन कथा पूर्वाह्न 10.00 बजे शुरू होगी तथा हवन एवं व्यास पूजन के साथ ही कथा का समापन हो जायेगा। प्रेसवार्ता को संबोधित करते हुए समिति के अध्यक्ष धर्मपाल गोयल ने बताया कि फाल्गुन मास एवं होली महोत्सव के अवसर पर श्रीमद्भागवत कथा का आयोजन कराया जा रहा है, जिसमें कथा व्यास जी द्वारा सैकड़ों का कार्य करेगी। कथा के संयोजक अनिल गोयल ने बताया कि भागवत कथा के आयोजन से नोएडा के निवासियों को भगवान श्रीकृष्ण के चरित्र को जानने का अवसर मिलेगा। इस अवसर पर आयोजन समिति के कोषाध्यक्ष राजेन्द्र गर्ग, वरिष्ठ उपाध्यक्ष राजकुमार गर्ग, हनुमान मंदिर समिति की अध्यक्षा सुशीला शर्मा, गंगाराम यादव, एस एम गुप्ता, अनंत वर्मा, मनोज गोयल विनय गुप्ता, आदि उपस्थित थे।

वर्ष 2017 से पहले का दंगा प्रदेश अब चंगा प्रदेश के नाम से जाना जाता है

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
नोएडा। नोएडा एक जमाना था, जब विभिन्न देशों के लोग हिंदुस्तान की तरफ आंख दिखाकर बात करते

थे, लेकिन आज प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में किसी भी देश की हिम्मत नहीं है कि वह हिंदुस्तान की तरफ आंख उठा कर भी देख सके। सन 2014 से पहले देश को अपनी अर्थव्यवस्था को कायम रखने के लिए सोना भी गिरवी रखना पड़ता था, लेकिन आज हिंदुस्तान की अर्थव्यवस्था दुनिया के तीन बड़े देशों की अर्थव्यवस्था के समकक्ष पहुंच गई है। जेवर विधायक धीरेन्द्र सिंह ने ग्राम डाढा में ठगांव चलो अभियानठ के अंतर्गत आयोजित कार्यक्रम में उपस्थित लोगों को संबोधित करते हुए कहे। जेवर विधायक धीरेन्द्र सिंह ने आगे कहा कि ङठवर्ष 2017 से पहले इसी उत्तर प्रदेश को दंगा प्रदेश कहा जाता था, जहां हिंसा, महिलाओं के साथ छेड़छाड़, लूट, हत्या जैसी घटनाएं घटित होती थी, लेकिन आज 07 वर्षों में श्री योगी आदित्यनाथ जी के विजनरी नेतृत्व में यह उत्तर प्रदेश आज चंगा प्रदेश के नाम से जाना जाता है। तत्कालीन सरकारों में उत्तर प्रदेश की अर्थव्यवस्था 08 से 10वें से भी अधिक पायदान पर हुआ करती थी, लेकिन आज इसी उत्तर प्रदेश की अर्थव्यवस्था दूसरे नंबर पर है। जेवर विधायक धीरेन्द्र सिंह ने अंत में कहा कि ठविगत 07 वर्षों में जेवर क्षेत्र ने विकास के मामले में जो छलांग लगाई है, उसी का नतीज़ा है कि आज दुनिया का हर व्यक्ति जेवर को जानने लगा है।

भाजपा तीसरी बार पूर्ण बहुमत की सरकार

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
नोएडा। नोएडा भारतीय जनता पार्टी ने गौतम बुद्ध नगर से डा महेश शर्मा को तीसरी बार उम्मीदवार घोषित करके विपक्षियों के किले को ढहा दिया। शहीद भगत सिंह मंडल के मंत्री एवं भाजपा युवा नेता

गोरे लाल ने कहा कि भारतीय जनता पार्टी तीसरी बार मोदी जी के नेतृत्व में पूर्ण बहुमत से सरकार बनाएगी। गौतमबुद्ध नगर में सपा, बसपा, आप एवं कांग्रेस के पास कोई प्रत्याशी नहीं दिख रहा है जो डॉ महेश शर्मा का मुकाबला कर सके। इस डा महेश शर्मा लगभग 4 लाख वोटों से जीतेंगे। भारतीय जनता पार्टी का हर एक कार्यकर्ता पूरी तन्मयता के साथ चुनाव प्रचार में जुटे हुए हैं। गांव गांव में जाकर एवं हर सेक्टर में जाकर लोगों से अपील कर रहे हैं और मोदी के विकास नीति को जनता को बता रहे हैं। भाजपा युवा नेता गोरे लाल ने हमारे जिला संवाददाता देव मणि शुक्ल से एक भेंटवार्ता में बताया कि भारतीय जनता पार्टी की सरकार देश के विकास के लिए कटिबद्ध है और देश की अर्थव्यवस्था को आगे बढ़ाने में भी अहम भूमिका निभा रही हैं। हमारा देश विश्व के मानचित्र में एक अहम स्थान बना लिया है। देश में शिक्षा, चिकित्सा जैसी मूलभूत सुविधाएं मुहैया कराना हमारी सरकार की प्राथमिकता है। हमारी ने धारा 370, 35ए हटा कर एवं अयोध्या में भगवान श्री राम को पुनः स्थापित करने का जो काम किया है यह अकथनीय है।

शेरशाह की ये लाइन बोलकर सिद्धार्थ ने जीता था कियारा का दिल, छिप-छिप कर मिलने से शादी तक, फिल्मी है ये लव स्टोरी

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)
नई दिल्ली। सिद्धार्थ मल्होत्रा और कियारा आडवाणी की लव स्टोरी किसी फिल्म से कम नहीं। दोनों हिंदी फिल्म इंडस्ट्री के पावर कपल है। फिल्म शेरशाह के सेट शुरू हुआ इनका प्यार परवान चढ़कर हमसफर बनने की मंजिल तक पहुंचा। वहीं, अब 7 फरवरी को कपल अपनी पहली वेडिंग एनिवर्सरी मना रहा है।कियारा आडवाणी और सिद्धार्थ मल्होत्रा की लव स्टोरी भले शेरशाह की शूटिंग के दौरान शुरू हुई थी लेकिन इनकी पहली मुलाकात लस्ट स्टोरी के सेट पर हुई थी। जहां दोनों ने पहली बार एक-दूसरे को देखा था। इसके बाद इनकी जोड़ी फिल्म शेरशाह के लिए फाइनल कर दी गई। इसके साथ ही इनकी लव स्टोरी की शुरूआत हुई।सिद्धार्थ मल्होत्रा और कियारा आडवाणी की लव स्टोरी फैंस के साथ बॉलीवुड के लिए भी हैरान करने वाला था, क्योंकि इनके रोमांस की किसी को कानों- कानों भनक तक नहीं लग पाई थी।कियारा आडवाणी और सिद्धार्थ मल्होत्रा की लव स्टोरी भले शेरशाह की शूटिंग के दौरान शुरू हुई थी, लेकिन इनकी पहली मुलाकात लस्ट स्टोरी के सेट पर हुई थी। जहां दोनों ने पहली बार एक-दूसरे को देखा था। इसके बाद इनकी जोड़ी फिल्म शेरशाह के लिए फाइनल कर दी गई।शेरशाह में दोनों की केमिस्ट्री पर्दे पर जितनी जानदार लगी, पर्दे के पीछे भी हाल कुछ ऐसा ही था। फिल्म की शूटिंग खत्म हो गई, थिएटर्स में रिलीज हुई और हिट भी हो गई, लेकिन विक्रम बत्रा और डिंपल चीमा की कहानी तो अभी बस शुरू हुई थी।एक फिल्म के सेट पर शुरू हुआ कियारा आडवाणी और सिद्धार्थ मल्होत्रा का रोमांस अब सीरियस होने लगा था। दोनों बड़े सेलिब्रिटी थे ऐसे में मीडिया की नजरों से बचकर एक- दूसरे से मिलते थे, को चुनते थे, जहां किसी को उन पर शक न हो। एक बार तो सिद्धार्थ बुरी तरह बीमार थे, लेकिन फिर भी वो एक पार्टी में गए, क्योंकि वहां कियारा आडवाणी आने वाली आडवाणी इस बार करण जौहर की बर्थडे पार्टी में मिले थे। इस पार्टी से ही दोनों के रिलेशनशिप

की अफवाह उड़ने लगी थी, क्योंकि पार्टी के दौरान कियारा अपने हाथ से सिद्धार्थ को खाना खिलाते हुए नजर आई थीं और कई लोगों ने उन्हें नोटिस भी किया था। करण जौहर की नजर भी इनके रोमांस पर पड़ी थी और उन्होंने तो इनके शादी तक की भविष्यवाणी कर दी थी।सिद्धार्थ मल्होत्रा ने बेहद फिल्मी अंदाज में कियारा आडवाणी को शादी के लिए प्रपोज किया था। एक्टर अपने परिवार के साथ कियारा को रोम ट्रिप पर ले गए थे। जहां उन्होंने कैंडल लाइट डिनर अरेंज किया था। खाना खाने के बाद दोनों टहलने के लिए निकल गए। इस बीच अचानक झाड़ियों से एक वायलिन बजाता हुआ इंसान अचानक बाहर निकला और एक के साथ। एक्टर ने अपनी लेडी लव को शेरशाह का डायलॉग- दिल्ली का सीधा- साधा लौंडा हूं, बोलते हुए प्रपोज किया। इतना सुनते ही कियारा हंस पड़ीं और तुरंत सिद्धार्थ का प्रपोजल एक्सेप्ट कर लिया।सिद्धार्थ मल्होत्रा और कियारा आडवाणी ने शादी के लिए वैलेंटाइन वीक को चुना। साल 2023 में रोज डे के मौके पर 7 फरवरी को जैसलमेर के सूर्यगढ़ पैलेस में दोनों ने डेस्टिनेशन वेडिंग की। इस शाही शादी को बेहद प्राइवेट रखा गया था।

रणबीर-आलिया के बाद अनंत अंबानी की शादी में ये सिंगर्स करेंगे परफॉर्म, चेक करें लिस्ट?

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)
नई दिल्ली।भारत के सबसे बड़े उद्योगपति मुकेश अंबानी के बेटे अनंत अंबानी की शादी जल्द ही होने वाली है। अनंत अपनी मंगेतर राधिका मर्चेंट के साथ कुछ समय बाद शादी के बंधन में बंधते हुए नजर आएंगे। लंबे समय से राधिका और अनंत की शादी के प्री वेडिंग फंक्शन को लेकर सुर्खियां बनी हुई हैं।देश के मशहूर बिजनेसमैन मुकेश अंबानी के बेटे अनंत अबानी जल्द ही शादी के बंधन में बंधने वाले हैं। मंगेतर राधिका मर्चेंट के साथ अनंत की शादी की तैयारियों को लेकर लगातार खबरें सामने आती रहती हैं। इस कपल के प्री वेडिंग फंक्शन में कई सेलेब्स परफॉर्मेंस देते हुए नजर आएंगे इस मामले में अब कुछ सिंगर्स के नाम भी सामने आ रहे हैं।हाल ही में ये खबर सामने आई की सुपरस्टार रणबीर कपूर और आलिया भट्ट इस कपल के प्री वेडिंग फंक्शन में परफॉर्मेंस देते हुए नजर आएंगे। इस मामले में अब इंडस्ट्री के कई दिग्गज सिंगर्स के नाम भी सामने आ रहे है, जो अनंत और राधिका के प्री वेडिंग कार्यक्रम में रंग जमाएंगे। अंबानी परिवार का कोई भी फंक्शन क्यों न हो वह अक्सर लाइमलाइट का हिस्सा बनता है। ऐसे में अब जब अनंत अंबानी की शादी है तो यकीनन तौर पर ये एक ग्रैंड वेडिंग इवेंट साबित होने वाला है। कुछ समय पहले अनंत अंबानी और राधिका मर्चेंट की शादी का कार्ड भी सोशल मीडिया पर वायरल हुआ, जिसमें इस कपल के प्री वेडिंग की डिटेल्स दी गई।ऐसे में अब पिंकविला की खबर में ये बताया गया है कि गुजरात के जामनगर में होने वाले अनंत अंबानी के प्री वेडिंग कार्यक्रम में बॉलीवुड सिंगर्स अरिजीत सिंह, प्रीतम और हरिहरन जैसे गायक अपनी परफॉर्मेंस से समां बांधते हुए दिख सकते हैं।

खूंखार विलेन से होगा वरुण धवन का मुकाबला, 'बेबी जॉन' का नया पोस्टर देख सहम जाएंगे आप!

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)
नई दिल्ली। बदलापुर, कलंक, दिलवाले जैसी फिल्मों के बाद एक धमाकेदार टीजर जारी कर अपनी अपकमिंग ब्लॉकबस्टर की एक झलक दिखाई थी। एक मिनट के वीडियो

बार फिर वरुण धवन एक्शन अवतार में नजर आने वाले हैं। फैंस के बीच क्रेज इसलिए और भी ज्यादा है, क्योंकि वह 'जवान' डायरेक्टर एटली की एक्शन थ्रिलर 'बेबी जॉन'है।एटली की आगामी फिल्म बेबी जॉन का टीजर रिलीज हो गया है। यह भी बता दिया गया है कि फिल्म कब थिएटर्स में आने वाली है। इस बीच एटली और वरुण धवन ने फिल्म का एक और इंटेंस पोस्टर रिवील किया है। इस पोस्टर में वरुण का खतरनाक अवतार दिख रहा है। फिल्म का लुक शायद आपके रूह को कंपाने के लिए काफी है।बेबी जॉन' को लेकर काफी समय से बज बना हुआ था। हाल ही में, एटली ने फिल्म के टाइटल के साथ में वरुण धवन के इंटेंस लुक ने फैंस के होश उड़ा दिए थे।बुधवार को वरुण धवन ने अपनी आगामी फिल्म 'बेबी जॉन' से एक और पोस्टर शेयर कर दिया है। इस पोस्टर ने फैंस के बीच क्रेज पहले से और बढ़ा दिया है। खूंखार नजरों और हाथ में हथियार लिए वरुण धवन का ये अवतार शायद आपने पहले कभी नहीं देखा होगा। बैकग्राउंड में एक खूंखार विलेन दिख रहा है। इसे देख पक्का आपकी रूह कांप जाएगी।इसे शेयर करते हुए 'बवाल' एक्टर ने कैप्शन में लिखा, कसकर पकड़ें, यात्रा उग्र होने वाली है। एटली निर्मित फिल्म का पोस्टर देख फैंस जमकर रिएक्शन दे रहे हैं।

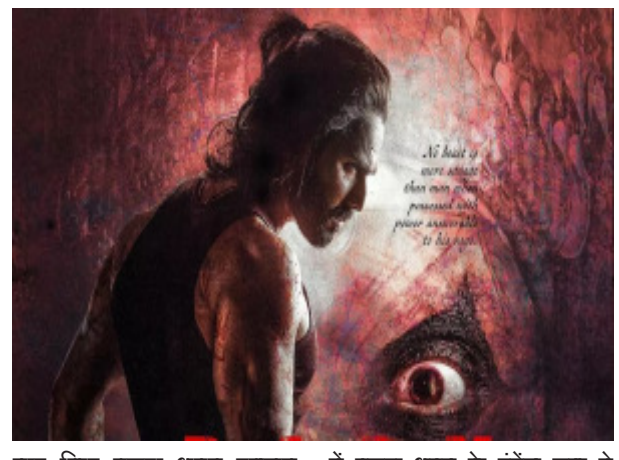

'चुलबुल पांडे' के किरदार में लौटेंगे साउथ का ये डायरेक्टर संभालेगा कमान

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)
नई दिल्ली। यूं तो सलमान खान ने अपने फिल्मी करियर के दौरान एक से बढ़कर एक फिल्म की है, लेकिन दबंग फिल्म फ्रेंचाइजी उनकी बेहतरीन मूवीज में से एक मानी जाती हैं। इस फ्रेंचाइजी के अब तक तीन पार्ट को रिलीज किया जा चुका है, जिन्होंनें दर्शकों का भरपूर मनोरंजन किया है। 4सलमान खान की शानदार फिल्म फ्रेंचाइजी दबंग को भला कौन कैसे भूल सकता है। पुलिस ऑफिसर चुलबुल पांडे की भूमिका में भाईजान फैंस का भरपूर मनोरंजन कर चुके हैं। अब तक इस फ्रेंचाइजी के तीन पार्ट रिलीज किए जा चुके हैं और अब सलमान खान की दबंग 4 को लेकर बड़ी खबर सामने आ रही है जो मूवी के डायरेक्टर से जुड़ी हुई है।लंबे समय से भाईजान की दबंग 4 को लेकर सुखियां बनी हुई हैं, इस बीच सलमान खान की इस फिल्म के चौथे पार्ट को लेकर एक बड़ी खबर सामने आ रही है, जिसमें ये बताया जा रहा है कि कौन सा डायरेक्टर दबंग 4 का डायरेक्शन कर सकता है। सलमान खान की दबंग के पहले दो पार्ट बॉक्स ऑफिस पर सुपर-डुपर हिट साबित हुए। लेकिन साल 2019 में रिलीज हुई दबंग 3 उम्मीद के मुकाबले अपनी छाप नहीं छोड़ सकी। इसके बावजूद फैंस में दबंग फ्रेंचाइजी को लेकर जबरदस्त क्रेज देखने को मिल रहा है और प्रशंसक सलमान खान को जल्द से जल्द चुलबुल पांडे के किरदार में देखना चाहते हैं।इस बीच टेली चक्कर की रिपोर्ट के अनुसार दबंग 4 के डायरेक्टर के

लिए साउथ सिनेमा के निर्देशक एटली का नाम सामने आ रहा है, ये वही एटली हैं, जिन्होंने बीते साल शाह रुख खान के संग जवान जैसी मेगा ब्लॉकबस्टर फिल्म दी है। हालांकि इस मामले की अभी कोई आधिकारिक पुष्टि नहीं की जा सकती है कि एटली ही दबंग 4 के निर्देशक होंगे।लेकिन अगर ऐसा होता है तो यकीनन तौर पर फैंस के लिए सलमान खान और एटली की जोड़ी के जरिए एंटरटेनमेंट और एक्शन का दोगुना डोज मिलेगा। यूं तो सलमान खान को हिंदी सिनेमा का प्रेम माना जाता है, लेकिन दबंग के चुलबुल पांडे के रोल में भाईजान की अनोखी पहचान है। इस किरदार में सलमान काफी जचते हैं, उनके स्टाइल और डायलॉग काफी पॉपुलर हुए हैं।

अन्नया पांडे के बाद अब उनके भाई बॉलीवुड में दिखाएंगे एक्टिंग टैलेंट, शाह रुख के नक्शे कदम करेंगे फॉलो

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)
नई दिल्ली।साल 2023 में राजवीर देओल से लेकर सुहाना खान से लेकर खुशी कपूर और अगस्त्य नंदा सहित कई स्टार किड्स ने अभिनय की दुनिया में कदम रखा था। अमिताभ बच्चन के नाती अगस्त्य नंदा को जहां उनकी पहली ही वेब फिल्म में एक्टिंग के लिए काफी सराहा गया, तो वहीं शाह रुख खान की लाडली सुहाना और खुशी कपूर की एक्टिंग की काफी आलोचना हुई।साल 2024 में कई स्टारकिड्स फिल्मी दुनिया में बतौर अगली फिल्म की घोषणा की थी। रोमांटिक फिल्में बनाने के लिए मशहूर निर्देशक मोहित सूरी इस बार एक यंग रोमांटिक लव स्टोरी लेकर आने की तैयारी में हैं। इस फिल्म में लीड एक्टर के तौर पर अहान पांडे को निर्देशक अपनी फिल्म में कास्ट करने वाले हैं।हालांकि, अहान के अपोजिट इस युवा लव स्टोरी में कौन सी एक्ट्रेस को कास्ट किया जाएगा, इस पर अब भी सस्पेंस बना हुआ है। आपको बता दें कि पिछले पांच सालों से अहान शेट्टी यशराज की टैलेंट कंपनी से जुड़े

एक्टर अपनी शुरुआत करने के लिए तैयार हैं। राशा थडानी से लेकर अमन देवगन तक इस साल स्क्रीन पर आएंगे। अब इस लिस्ट में अनन्या पांडे के भाई अहान का नाम भी जुड़ गया है। जो बॉलीवुड में युवा रोमांटिक फिल्म के साथ अपना अभिनय टैलेंट दिखाने की तैयारी कर रहे हैं।बीते साल के बाद अब इस नए साल 2024 में भी राशा थडानी से लेकर अमन देवगन कई स्टार किड्स अब अभिनय की दुनिया में कदम रखने जा रहे हैं।बॉलीवुड में डेब्यू करने वाले स्टार किड्स की लिस्ट में एक नाम अब अनन्या पांडे के भाई अहान पांडे का भी जुड़ चुका है, जो जल्द ही मोहित सूरी की फिल्म से अभिनय की दुनिया में कदम रखेंगे।बीते दिनों ही 'एक विलेन' के निर्देशक मोहित सूरी ने यशराज के साथ अपनी हुए हैं।रिपोर्ट्स के मुताबिक, मोहित सूरी से अहान पांडे को फिल्म में कास्ट करने से पहले मिलवाया गया था ताकि डायरेक्टर ये समझ सके कि अहान उनकी फिल्म में बतौर एक्टर सही च्वाइस हैं या नहीं।अहान ने अपने ऑडिशन और स्क्रीन टेस्ट से मोहित सूरी को काफी इम्प्रेस किया, जिसके बाद उन्हें इस फिल्म में कास्ट किया गय मोहित सूरी की इस रोमांटिक फिल्म का टाइटल अभी तक डिसाइड नहीं किया गया है। रिपोर्ट्स के मुताबिक, ये फिल्म इस साल के अंत में फ्लोर पर जाने वाली है।मोहित सूरी की फिल्मों की बात करें तो उन्होंने साल 2005 में बतौर डायरेक्टर अपनी शुरुआत फिल्म 'जहर' से की थी। इसके बाद उन्होंने कलयुग, वो लम्हें, आवारापन और मर्डर 2 जैसी कई सफल फिल्में दीं।

रुबीना दिलैक प्रेग्रेंसी के बाद बॉडी शेमिंग का शिकार हुई रुबीना दिलैक, नेटिजंस बोले- 'भोजपुरी की हीरोइन'

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)
नई दिल्ली।रुबीना दिलैक छोटे पर्दे की फेमस अदाकाराओ में से एक हैं। बीते साल के अंत में रुबीना ने दो जुड़वा बेटियों को जन्म दिया है और वह मौजूदा समय में एक्टिंग से ब्रेक पर मौजूद हैं। हाल ही में रुबीना ने अपनी कुछ लेटेस्ट तस्वीरों को सोशल मीडिया पर शेयर किया। हाल ही में टीवी एक्ट्रेस रुबीना दिलैक की लेटेस्ट तस्वीरें सोशल मीडिया पर सामने आई थी जिनमें वह साड़ी में अपना कर्वी फिगर फ्लॉन्ट करती हुई नजर आई। अब रुबीना की इन फोटो लेकर उन्हें सोशल मीडिया पर जमकर ट्रोल किया जा रहा है। नेटिजंस प्रेगनेंसी के बाद एक्ट्रेस के बढ़े हुए फैट को लेकर बॉडी शेमिंग कर रहे हैं।इन फोटो में एक्ट्रेस अपने कर्वी फिगर को फ्लॉन्ट करती दिखाई दीं, लेकिन मां बनने के बाद रुबीना दिलैक के बढ़ते हुए फैट को लेकर सोशल मीडिया पर उनकी जमकर बॉडी शेमिंग की जा रही है और नेटिजंस उन्हें जमकर ट्रोल कर रहे हैं। 2 दिन पहले रुबीना दिलैक ने अपने ऑफिशियल इंस्टाग्राम हैंडल पर कुछ लेटेस्ट तस्वीरों को साझा किया। इन फोटो में वह साड़ी में अपने हुसन का जलवा बिखरेती हुई नजर आईं, लेकिन इन तस्वीरों को लेकर अब रुबीना की सोशल मीडिया पर फजीहत हो गई है।दरअसल नेटिजंस ने एक्ट्रेस के बॉडी फैट को लेकर उन्हें टारगेट कर लिया है और उनकी बॉडी शेमिंग कर रहे हैं। एक यूजर्स ने रुबीना दिलैक की इन फोटो पर कमेंट कर लिखा है-

अंकिता लोखंड चलीं ससुराल, चेहरे पर दिखी टेंशन, फैंस बोले- 'विक्की की मम्मी

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)
नई दिल्ली। टीवी की जानी-मानी अभिनेत्री अंकिता लोखंडे रियलिटी शो 'बिग बॉस सीजन खत्म होने के बाद पहली बार ससुराल जा रही हैं। वह पति विक्की जैन के साथ ससुराल के लिए रवाना हो गई हैं। पवित्र रिश्ता एक्ट्रेस अंकिता लोखंडे बिग बॉस 17 से निकलने के बाद पति विक्की जैन के साथ पहली बार ससुराल जा रही हैं। हाल ही में वह अपने पति के साथ बिलासपुर के लिए रवाना हुईं। अंकिता और विक्की एक साथ मुंबई एयरपोर्ट पर स्पॉट किए। अंकिता के चेहरे पर उदासी देख फैंस जमकर रिएक्शन दे रहे हैं। देखिए उनका वीडियो।सलमान खान के रियलिटी किया, फोटो खिंचवाई और वहां से चली गईं। अंकिता और विक्की को देख लोग मान रहे हैं कि वह ससुराल जा रही हैं। अंकिता लोखंडे के लुक की बात करें तो वह विंटर आउटफिट में नजर आ रही हैं। एक्ट्रेस ग्रीन कलर के को-ऑर्ड सेट और ब्लैक बूट्स में नजर आ रही हैं। उन्होंने अपने हाथ में विंटर जैकेट भी पकड़ रखा है और ब्लैक गॉगल्स लगाया है। वहीं, विक्की ग्रे पैंट और पर्पल टीशर्ट में हैंडसम लग रहे हैं। वीडियो सामने आने के बाद लोगों ने एक्ट्रेस के चेहरे पर उदासी नोटिस की। अंकिता लोखंडे के हाव-भाव देखकर लोग उन्हें जमकर ट्रोल कर रहे हैं। एक यूजर ने लिखा, अंकिता की बॉडी लैंग्वेज

शो 'बिग बॉस 17' से निकलने के 10 दिन बाद अब अंकिता ससुराल जा रही हैं। हाल ही में, एक्ट्रेस को एयरपोर्ट पर पति के साथ स्पॉट किया गया।बुधवार की दोपहर अंकिता लोखंडे और विक्की जैन मुंबई एयरपोर्ट पर स्पॉट हुए। अंकिता और विक्की को एयरपोर्ट पर छोड़ने एक्ट्रेस की मां आई थीं। उन्होंने बेटी और दामाद को ड्रॉप से पता चल रहा है कि वह खुश नहीं हैं। वह हंसने के लिए खुद को फोर्स कर रहीं। एक और ने कहा, ठअंकिता की तो स्माइल ही चली गई।एक यूजर ने लिखा, ठविक्की बेटा फ्लाइट में लड़ना नहीं। एक नेटिजन ने कहा, ठइनकी फिर लड़ाई हुई है गैरंटी।

शाहिद-कृति की फिल्म लेगी बम्पर ओपनिंग या होगी फुस्स क्या कहती है एडवांस बुकिंग

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)
नई दिल्ली। शाहिद कपूर लंबे वक्त बाद थिएटर्स में वापसी कर रहे हैं। एक्टर फिल्म 'तेरी बातों में ऐसा उलझा जिया' लेकर आ रहे हैं, जो ट्रेलर रिलीज से ही चर्चा में बनी हुई है। फिल्म शाहिद कपूर के साथ लीड रोल में कृति सेनन नजर आएगी। 'तेरी बातों में ऐसा उलझा जिया' की कहानी काफी डिफरेंट हैं। अब देखना ये है कि फिल्म को दर्शक कितने नंबर देते हैं। शाहिद कपूर और कृति सेनन की फिल्म तेरी बातों में ऐसा उलझा जिया रिलीज के लिए पूरी तरह तैयरा है। इस बीच फिल्म की एडवांस बुकिंग के लिए टिकट खिड़की 6 फरवरी को खोल दिए गए। इसके साथ ही पहले दिन की फिल्म बुकिंग रिपोर्ट भी आ गई हैतेरी बातों में ऐसा उलझा जिया' कुछ दिनों बाद दुनियाभर के थिएटर्स में रिलीज होने जा रही है। आइए जानते हैं पहले दिन फिल्म बंपर ओपनिंग करेगी या फुस साबित होगी तेरी बातों में ऐसा उलझा जिया' की एडवांस बुकिंग के लिए टिकट खिड़की 6 फरवरी को खोल दिए गए। इसके साथ ही पहले दिन की फिल्म बुकिंग रिपोर्ट भी आ गई है। के आंकड़ों के अनुसार, देशभर में 'तेरी बातों में ऐसा उलझा जिया' को 4718 भी कर लिया है। 'तेरी बातों में ऐसा उलझा जिया' की एडवांस बुकिंग अभी दो दिन और जारी रहेगी। इस दौरान फिल्म का ओपनिंग कलेक्शन बढ़ना तय है तेरी बातों में ऐसा उलझा जिया' एक साइंस-फिक्शन फिल्म है,

स्क्रीन्स मिले है एडवांस बुकिंग में 'तेरी बातों में ऐसा उलझा जिया' के पहले दिन 28 हजार (28234) से ज्यादा टिकट बिक चुके हैं। इसके साथ ही फिल्म ने अब तक 57.72 लाख (5772316) का ग्रॉस बिजनेस जिसमें शाहिद कपूर और कृति सेनन लीड रोल निभा रहे हैं। शाहिद ने एक कंप्यूटर इंजीनियर आर्यन और कृति ने रोबोट शिफ्रा (एर्ह्ई- सुपर इंटेलिजेंट फीमेल रोबोट ऑटोमेशन) का किरदार अदा किया है।

गदर 2 की 'सकीना' पर चढ़ा बोल्डनेस का खुमार, 7 महीने के बाद सामने अमीषा की ये बिकिनी फोटो

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)
नई दिल्ली। ऋतिक रोशन की फिल्म कहो न प्यार है से फिल्मी दुनिया में कदम रखने वालीं अमीषा पटेल अपनी कमाल की अदाकारी के लिए जानी जाती हैं। सनी देओल स्टारर फिल्म गदर 2 की सकीना के रूप में अमीषा ने अपनी खास पहचान बनाई है।फिल्म गदर 2 से फैंस के दिलों पर राज करने वालीं अदाकारा अमीषा पटेल किसी अलग पहचान की मोहताज नहीं हैं। रियल लाइफ में बोल्डनेस के लिए अमीषा का नाम काफी जाना जाता है। इस बीच सोशल मीडिया पर अमीषा पटेल की लेटेस्ट तस्वीरें सामने आई हैं जिनमें एक बार फिर से अमीषा बिकिनी लुक से तहलका मचाती हुई नजर आ रही हैं।एक्ट्रेस की

पिछली फिल्म गदर 2 ने बॉक्स ऑफिस पर रिकॉर्डतोड़ कमाई कर धमाल मचाया था। इस बीच अब सोशल मीडिया पर अमीषा पटेल की लेटेस्ट तस्वीरें सामने आई हैं, जिनमें अमीषा अपने चिर प्रतिद्वंदी बिकिनी अवतार में नजर आ रही हैं। गदर 2 से पहले कुछ समय के लिए अमीषा पटेल एक्टिंग की दुनिया से दूर रहीं। इस दौरान अमीषा ने सोशल मीडिया पर बोल्डनेस के जरिए खुद की छवि बना ली। जिसके चलते अक्सर अमीषा का गॉजिय्यस अंदाज फैंस को देखने को मिलता था।लेकिन गदर 2 की रिलीज के बाद से फैंस अमीषा को बिकनी लुक में देखने के लिए तरस रहे थे और अब फिल्म की रिलीज के करीब 7 महीने बाद अमीषा पटेल ने फैंस की ख्वाहिश को पूरा कर दिया है।

रकुल प्रित शादी को आरती सिंह ने किया कंफर्म, बताया पहला कार्ड किसको भेजेंगे

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)
नई दिल्ली। बॉलीवुड गलियारों में एक के बाद एक सेलेब्स शादी के बंधन में बंध रहे हैं। एक तरफ एक्ट्रेस रकुल प्रीत सिंह और जैकी भगनानी की शादी की खबर जोरों पर है।कॉमेडियन और होस्ट कृष्णा अभिषेक की बहन और अभिनेत्री आरती सिंह की शादी की खबर पर पक्की मुहर लगाई है। उन्होंने कहा है कि हम जल्द ही आपके इसके बारे में सारी डिटेल्स देंगे। इतना ही नहीं उन्होंने यह भी बताया है कि वह शादी का पहला कार्ड किसको देंगे ।आरती सिंह इन दिनों अपनी शादी की खबरों के लेकर चर्चा में है। बीते दिनों खबर थी कि आरती सिंह अपने ब्वॉयफ्रेंड दीपक चौहान संग शादी के बंधन में बंधने जा रही हैं। हालांकि, आरती की तरफ से इस पर कोई ऑफिशियल घोषणा नहीं की गई थी, लेकिन अब खबर है कि उनके भाई कृष्णा ने इस पर पक्की मुहर लगा दी है।ई-टाइम्स की रिपोर्ट के मुताबिक, कृष्णा अभिषेक ने कहा है कि, मैं आरती को समझाता हूं कि वो शादी में बहुत सारा पैसा ना खर्च करे। हम अभी शादी के ऑफिशियल अनाउंसमेंट करने का इंतजार कर रहे हैं। हम जल्द ही आपके इसके बारे में सारी डिटेल्स देंगे। इतना ही नहीं जब एक्टर से उनके मामा गोविंदा के बारे में पूछा गया कि वह शादी में शामिल होंगे या नहीं तो इस पर उन्होंने कहा, वो हमारा परिवार हैं और वो पहले इंसान होंगे जिन्हें शादी का न्योता जाएगा। वो मेरे मामा है। हां हमारे बीच कई बाते मैच नहीं होती, लेकिन वो एक अलग मुद्दा है पर शादी का पहला कार्ड तो उनको ही जाएगा और वो शादी में जरूर आएंगे।बीते दिनों खबर थी कि आरती सिंह अपनी शादी के लिए अप्रैल और मई मंथ के बारे में सोच-विचार कर रही हैं। हालांकि, अभी तक मंथ फाइनल नहीं हुआ है। इसके अलावा खबर है कि एक्ट्रेस मुंबई में शादी के वेन्यू की तलाश कर रही है। वह मुंबई में ही शादी का विचार कर रही है। कहा जा रहा है कि एक्ट्रेस मुंबई में एक ग्रैंड वेडिंग की प्लानिंग कर रही हैं।

स्वत्वाधिकारी एवं मुद्रक डा. दीपक अरोरा द्वारा श्री आधुनिक प्रिन्टर्स एण्ड पैकेजर्स प्रा.लि. 1-मिर्जापुर रोड नैनी प्रयागराज उ.प्र. 211008 से मुद्रित एवं आधुनिक समाचार पब्लिसिंग हाउस सी 41 यूपीएसआईडीसी नैनी प्रयागराज 211010 (उ.प्र.) से प्रकाशित
सम्पादक/प्रकाशक
डा. पुनीत अरोरा
मो0न0 09415608783/10
RNI No. UPHIN/2012/41154
डाक पंजीयन नं. 99/2018-20
website:www.adhuniksamachar.com

नोटः- इस समाचार पत्र में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं सम्पादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अन्तर्गत उत्तरदायी तथा इनसे उत्पन्न समस्त विवाद इलाहाबाद न्यायालय के अधीन ही होगे।